RAJHIN/2016/70516

Bhilwara/171/2026-2028

सच्चाई से रुबरु

स्मार्ट हलचल

smarthalchal.com

वर्ष-10 | अंक-247 | जयपुर, बुधवार, 04 मार्च 2026 | मूल्य-4 रूपये

मिडिल ईस्ट जंगः इजरायल ने असेंबली ऑफ एक्सपर्ट्स की बिल्डिंग को निशाना बनाया, धार्मिक गुरु इकट्ठा हुए थे

ईरान में सुप्रीम-लीडर चुनाव के बीच इजराइल का हमला

तेल अवीव/तेहरान

मिडिल ईस्ट में ईरान के साथ शुरू हुई जंग चौथे दिन भी जारी रही। ये सब 28 फरवरी 2026 को अमेरिका और इजरायल की जॉइंट स्ट्राइक्स से शुरू हुआ था, जब ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह अली खामेनेई की मौत हो गई. तब से अब तक हालात बहुत तेजी से बिगड़े हैं. ईरान ने जवाबी हमले शुरू किए, गल्फ देशों में अमेरिकी बेस और दूतावासों पर ड्रोन और मिसाइल दागे. इजरायल ने लेबनान में हिजबुल्लाह के ठिकानों पर अटैक बढ़ाए. ईरान में मौतों का आंकड़ा अब 742 से ऊपर पहुंच गया है और दुनिया भर में तेल की कीमतें 150 डॉलर प्रति बैरल से ज्यादा हो गई हैं.

रिपोर्ट्स के मुताबिक, असेंबली ऑफ एक्सपर्ट्स की उस इमारत को निशाना बनाया गया, जहां वरिष्ठ धार्मिक गुरु इकट्ठा हुए थे।

असेंबली ऑफ एक्सपर्ट्स 88 सदस्य होते हैं, जो देश के सुप्रीम लीडर के चयन की जिम्मेदारी

निभाता है। हमले में इमारत को भारी नुकसान पहुंचा है, हालांकि उस समय अंदर मौजूद लोगों की संख्या को लेकर आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है।

तेहरान के मेहराबाद एयरपोर्ट पर हमला

ईरान में तेहरान के मेहराबाद एयरपोर्ट पर हवाई हमले हुए हैं, जिसके बाद एयरपोर्ट पर भीषण आग लग गई है। यह जानकारी ईरानी समाचार एजेंसी ने दी है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पूर्वी तेहरान के हाकिमीयेह इलाके को भी निशाना बनाया गया।

ईरान की नेवी, एयरफोर्स पूरी तरह खत्मः ट्रम्प

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि ईरान की नेवी, एयर फोर्स और एंटी-एयरक्राफ्ट सिस्टम लगभग पूरी तरह खत्म कर दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि सब कुछ खत्म कर दिया गया है। ट्रम्प ने यह बयान व्हाइट हाउस में जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज से मुलाकात के बाद दिया।

अमेरिकी एम्बेसी ने लेबनान में कामकाज बंद किया

लेबनान की राजधानी बेरूत में अमेरिकी एम्बेसी ने सुरक्षा हालात के बीच अपना कामकाज अस्थायी रूप से बंद कर दिया है। दूतावास ने सार्वजनिक सेवाएं निलंबित करते हुए कहा कि स्टाफ की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। क्षेत्र में बढ़ते तनाव और सैन्य गतिविधियों के बीच यह कदम एहतियातन उठाया गया है। वीजा और अन्य कांसुलर सेवाएं फिलहाल उपलब्ध नहीं रहेंगी। अमेरिकी प्रशासन ने लेबनान में मौजूद अपने नागरिकों को सतर्क रहने और यात्रा संबंधी सलाह का पालन करने को कहा है।

नेतन्याहू बोले- जोरदार हमले जारी

इजराइली प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने कहा है कि उनकी सेना ईरान पर जोरदार हमले जारी रखे हुए है। एयर फोर्स बेस पर दिए बयान में उन्होंने कहा, 'हम ईरान पर पूरी ताकत से हमला कर रहे हैं। हमारे पायलट तेहरान के आसमान में हैं और लेबनान के आसमान में भी।

दुबई-अबू धाबी से 2000 से अधिक भारतीय लौटे

अमेरिका-इजराइल और ईरान जंग के बीच मिडिल ईस्ट में फंसे 2100 से ज्यादा भारतीय 7 फ्लाइट्स से मंगलवार को देश लौटे। वहीं मिडिल ईस्ट के कई देशों में एयरस्पेस बंद होने के चलते दिल्ली, मुंबई, बैंगलोर और चेन्नई एयरपोर्ट पर 250 से ज्यादा इंटरनेशनल फ्लाइट कैंसिल कर दी गईं। इनमें दिल्ली से 80+, मुंबई से 107, बेंगलुरु से 42 और चेन्नई से 30 उड़ानें शामिल हैं। मध्य पूर्व में चल रहे तनाव के कारण एअर इंडिया ने जेद्दा और दुबई के लिए खास राहत उड़ानें शुरू की हैं। वहीं, इंडिगो जेद्दाह से हैदराबाद, मुंबई, दिल्ली और अहमदाबाद के लिए 10 स्पेशल उड़ानें भी चला रहा है।

इम्पोर्ट रूट बंद होने से भारत के पास सिर्फ 25 दिन का तेल बचा

पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और ईरान-इजराइल युद्ध के बीच भारत के पास अब सिर्फ 25 दिनों का क्रूड ऑयल यानी कच्चा तेल और रिफाइंड ऑयल का स्टॉक बचा है। न्यूज एजेंसी ने देश की एनर्जी सिक्योरिटी को लेकर यह अपडेट सरकारी सूत्रों के मुताबिक दिया है। हालांकि सरकार अभी पेट्रोल-डीजल के दाम नहीं बढ़ाएगी। दरअसल, ईरान ने स्ट्रैट ऑफ होर्मुज को बंद करने का ऐलान कर दिया है। साथ ही ईरान की सेना ने चेतावनी दी है कि इस रूट से अगर कोई भी जहाज गुजरता है, तो उसे आग लगा दी जाएगी। ओमान और ईरान के बीच स्थित यह रूट दुनिया के ऑयल बिजनेस के लिए सबसे जरूरी माना जाता है।

पीएम मोदी की 48 घंटों में आठ देशों के नेताओं से शांति बहाली पर चर्चा

नई दिल्ली। अमेरिका और इस्राइल की ईरान पर संयुक्त सैन्य कार्रवाई के बाद पश्चिम एशिया क्षेत्र के हालात तेजी से बदल रहे हैं। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार की दोपहर खाड़ी क्षेत्र के

प्रमुख नेताओं से फोन पर बातचीत की। उन्होंने ओमान के सुल्तान हैथम बिन तारिक और कुवैत के क्राउन प्रिंस शेख सबा अल-खालिद अल-अहम अल-मुबारक अल-सबाह से भी बात की। प्रधानमंत्री ने दोनों नेताओं से अलग-अलग फोन पर बातचीत की और उनके देशों में हो रहे हमलों पर चिंता जताई। प्रधानमंत्री ने उन देशों में रह रहे भारतीय समुदाय की सुरक्षा पर भी चर्चा की। उन्होंने कतर के अमीर शेख तमीम बिन हामेद अल-थानी से भी फोन पर बात की। उन्होंने कतर पर हमलों की आलोचना की और देश में भारतीय समुदायों के समर्थन और देखभाल के लिए अमीर का धन्यवाद किया। प्रधानमंत्री मोदी ने बीते 48 घंटों में जिन देशों के नेताओं से फोन पर बातचीत की है, उनमें संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), इस्राइल, सऊदी अरब, जॉर्डन, बहरीन, ओमान, कुवैत और कतर शामिल हैं।

जेईई एडवांस में स्टूडेंट्स नहीं बदल सकेंगे कैटेगरी

कोटा। देश की प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई एडवांस को लेकर इस बार कई महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण सामने आए हैं। परीक्षा आयोजन संस्थान आईआईटी-रुड़की ने आधिकारिक वेबसाइट पर 94 फ्रिक्वेंटली आस्क्ड क्वेश्चंस जारी किए हैं। इनमें पात्रता, टाई-ब्रेकिंग नियम, कैटेगरी और अतिरिक्त विषय से जुड़े अहम बिंदु साफ किए गए हैं। स्टूडेंट्स को खासतौर पर एडिशनल सब्जेक्ट और कैटेगरी से जुड़े नियमों को ध्यान से समझना जरूरी है, क्योंकि छोटी सी गलती से पात्रता संकट में आ सकती है। स्पष्ट कर दिया है कि आगामी जेईई एडवांस में पात्रता नियमों को लेकर किसी भी तरह की ढिलाई नहीं दी जाएगी।

ट्रांसपोर्ट व्यापारी की इकलौती बेटी बनेगी साध्वी

बाड़मेर। ट्रांसपोर्ट व्यापारी की इकलौती बेटी संतोष मालू (28) 5 मार्च जैसलमेर में सांसारिक जीवन

को त्याग संयम जीवन के पथ पर जैन दीक्षा ग्रहण कर साध्वी बनेंगी। सोमवार रात बाड़मेर से उनके घर से उनको परिवार और समाज के लोगों ने भावुक होकर विदाई दी। व्यापारी की बेटी ने घर से विदाई लेते समय घर की दीवार पर लिखा ' दासी नहीं रानी बनने जा रही हूं। इसके बाद सांसारिक सुखों की तमाम चीजों को ठुकराते हुए वह जैसलमेर के लिए रवाना हुईं।

होली मनाने जा रहे पति-पत्नी समेत 6 की मौत

यमुना एक्सप्रेस-वे पर बस-कार की टक्कर

हाथरस

यूपी के हाथरस में यमुना एक्सप्रेस-वे पर मंगलवार तड़के डबल डेकर बस ने चलती ईको वैन को पीछे टक्कर मार दी। हादसे में पति-पत्नी समेत 6 लोगों की मौत हो गई, 7 लोग घायल हो गए। मृतकों में 3 आगरा और 3 राजस्थान के धौलपुर के रहने वाले थे। होली के लिए घर जा रहे थे।

बस दिल्ली से गोरखपुर, जबकि वैन दिल्ली से धौलपुर जा रही थी। ओवरटेक करने की कोशिश करते वक्त टक्कर हुई। टक्कर इतनी भीषण थी कि वैन उछलकर 10 फीट दूर गिरी।

हादसे के बाद चीख-पुकार मच गई। सड़क पर लाशें बिछ गईं। एक्सप्रेस-वे पर जाम लग गया। सूचना मिलते ही पुलिस अफसर पहुंचे। घायलों को तत्काल खंदौली सीएचसी भिजवाया। जहां से तीन को आगरा रेफर कर दिया।

हाथरस में यमुना एक्सप्रेस-वे के माइलस्टोन 141 पर निजी डबल डेकर बस गोरखपुर की तरफ जा रही थी। बस के आगे ईको वैन चल रही थी। वैन में 13 लोग सवार थे।

सभी होली के त्योहार के लिए अपने-अपने घर जा रहे थे। तड़के 4.15 बजे तेज रफ्तार बस ने वैन को ओवरटेक करने की कोशिश की और बेकाबू होकर वैन को पीछे से टक्कर मार दी।

मृतकों की पहचान विजय (27) पुत्र सुखराम बघेल, पत्नी पिंकी (26) निवासी सुडरई थाना शमशाबाद (आगरा) और नाथू देवी (35) पत्नी अमर सिंह निवासी रोई खास थाना शमशाबाद (आगरा) के रूप में हुई।

हादसे में दिनेश (55) पुत्र हुकम सिंह, पत्नी सुनीता (51) निवासी गंगोलियापुर थाना राजाखेड़ा, धौलपुर (राजस्थान) और लोकेश (35) पुत्र भूरी सिंह निवासी चमोली घर थाना राजाखेड़ा धौलपुर (राजस्थान) की भी मौत हो गई।

हादसे में इको चालक वीरेंद्र पुत्र रामप्रकाश भी घायल है। इसके अलावा राजाखेड़ा के ही मनोज पुत्र सुरेश, आर्यन (8)-अंशु (6) पुत्र अजय, मृतक विजय का बेटा लक्ष्य (1), बेटी प्राची (3) और उनकी साली पूनम बघेल (15) घायल हैं।

राजस्थान में 20 मिनट दिखा साल का पहला चंद्रग्रहण

विदेशी पर्यटकों ने पुष्कर घाट पर किया मंत्र जाप

जयपुर

साल का पहला चंद्रग्रहण राजस्थान में करीब 20 मिनट तक दिखाई दिया। जयपुर में कुछ देर के लिए ब्लड मून भी नजर आया। मंगलवार को श्री सत्यनारायण पूर्णिमा के दिन ग्रहण के कारण सुबह से ही धार्मिक गतिविधियों में बदलाव देखने को मिला। ग्रहण शुरू होने से करीब 9 घंटे पहले सुबह 6 बजकर 55 मिनट पर सूतककाल शुरू हो गया था। इस कारण अधिकतर मंदिरों के कपाट बंद कर दिए गए। हालांकि, चंद्रग्रहण के दौरान नाथद्वारा में श्रीनाथजी के दर्शन होते रहे। चंद्रग्रहण के दौरान जयपुर के गोविंददेवजी मंदिर में

भजन-कीर्तन हुए। पुष्कर के घाटों पर विदेशी पर्यटकों ने पूरी श्रद्धा के साथ मंत्र जाप किया। ग्रहण शुद्धिकरण के बाद मंदिरों के कपाट खोले गए।

चंद्र ग्रहण पर दिल्ली से असम तक दिखा ब्लड मून

साल का पहला चंद्र ग्रहण अब खत्म हो गया है। दुनिया के कई हिस्सों में चंद्र ग्रहण दिखाई दिया। भारत में सबसे पहले पूर्वी हिस्सों में चंद्र ग्रहण दिखाई दिया। चंद्रग्रहण की शुरूआत मंगलवार दोपहर 3:20 बजे से हुई और शाम को 6:46 बजे समाप्त हो गया। यह साल का पहला चंद्रग्रहण था जिसने सिंह राशि और पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में जगह बनाई। कोलकाता में पूर्णिमा का चांद ग्रहण के चलते आधा दिखाई दिया। ग्रहण समाप्त होने के बाद मंदिरों में भगवान को स्नान कराया गया। श्रृंगार और भोग आरती के बाद मंदिर खुल गए।

लग्जरी होटल में ताबड़तोड़ फायरिंग, मालिक की मौत

कई राउंड फायरिंग की, 3 लोग गंभीर घायल

चूरू

चूरू में बदमाशों ने एक लग्जरी होटल में अंधाधुंध फायरिंग कर दी। हमले में होटल मालिक सहित चार लोगों को गोलियां लगीं। मालिक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 3 लोगों की हालत गंभीर है। जिले के बीदासर में होटल द रॉयल ट्रीट में सोमवार देर करीब 12.30 बजे हुई फायरिंग का आज सुबह सीसीटीवी भी सामने आया है।

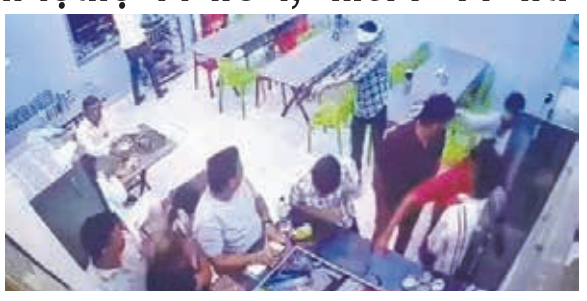

एसपी जय यादव ने बताया- देर रात 3 बदमाशों ने होटल द रॉयल ट्रीट में घुसकर होटल मालिक मनीराम मंडा की गोली मारकर हत्या कर दी। घटना के तुरंत बाद होटल को सील कर दिया गया था।

पुलिस के अनुसार मनीराम मंडा शराब और होटल कारोबार से जुड़े थे। आशंका जताई जा रही है कि यह हत्या शराब कारोबार से जुड़े दूसरे समूह से चल रही आपसी रंजिश के कारण की गई है।

भाजपा ने राज्यसभा के लिए 9 उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी की

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन राज्यसभा जाएंगे

नई दिल्ली

भाजपा ने मंगलवार को राज्यसभा के लिए 9 उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी की। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन बिहार से राज्यसभा जाएंगे। उनके अलावा लिस्ट में शिवेश कुमार का भी नाम है। छत्तीसगढ़ से भाजपा ने लक्ष्मी वर्मा को उम्मीदवार बनाया है। असम से तेराश गोवाला, जोगेन मोहन, हरियाणा से संजय भाटिया, ओडिशा मनमोहन सामल, सुजीत कुमार और पश्चिम

बंगाल से राहुल सिन्हा उम्मीदवार हैं।

10 राज्यों की 37 राज्यसभा सीटों पर 16 मार्च को चुनाव कराया जाएगा। 16 मार्च को सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे के बीच वोटिंग होगी और उसी दिन शाम 5 बजे वोटों की गिनती की जाएगी। ये सभी सीटें संबंधित सदस्यों के कार्यकाल पूरा होने के कारण रिक्त हो रही हैं। राज्यसभा का कार्यकाल छह साल का होता है। जिन सदस्यों का कार्यकाल अप्रैल 2026 में समाप्त हो रहा है, उनकी सीटों पर ये चुनाव कराए जा रहे हैं। निर्वाचित सदस्यों का कार्यकाल उनके शपथ ग्रहण की तिथि से आगामी छह वर्षों, यानी 2032 तक रहेगा। संबंधित राज्यों की जिन सीटों पर मौजूदा सदस्यों का कार्यकाल समाप्त हो रहा है, वहीं ये सीटें रिक्त मानी जाएंगी। 10 राज्यों की 37 राज्यसभा सीटों पर 16 मार्च को चुनाव होना है। जो सीटें खाली हो रही हैं, उनमें 12 एनडीए के पास हैं, 25 पर विपक्ष का कब्जा है।

कैदी को बिना ठोस कारण पैरोल देने से इनकार पर हाईकोर्ट सख्त

एसीएस होम, डीजीपी, कलेक्टर-एसपी को किया तलब, स्पष्टीकरण मांगा

जयपुर

राजस्थान हाईकोर्ट ने सजायाफ्ता कैदी के पैरोल प्रार्थना पत्र को बिना किसी ठोस कारण के खारिज करने पर नाराजगी जताई। कोर्ट ने एसीएस होम, डीजीपी, भरतपुर कलेक्टर और एसपी को तलब किया है। यह आदेश जस्टिस महेंद्र गोयल और जस्टिस समीर जैन की अदालत ने भरतपुर सेंट्रल जेल में बंद कैदी अनिल कपूर उर्फ अलियास रिंकू की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

अदालत ने कहा- प्रतिदिन इस न्यायालय के सामने इस तरह के मामले आते रहते है। इसमें पैरोल प्रार्थना पत्र को घोर लापरवाही और उदासीनता के साथ अस्वीकार कर दिया जाता है। इससे पैरोल का मूल उद्देश्य ही विफल हो जाता है। साथ ही कैदी के वैधानिक और मौलिक अधिकारों का भी होता है।

अधिवक्ता गोविंद प्रसाद रावत ने अदालत को बताया- याचिकाकर्ता भरतपुर सेंट्रल जेल में 12 साल से अधिक की सजा काट चुका है। वहीं पिछले 4 सालों से ओपन जेल में है। उसका आचरण भी संतोषजनक है। वहीं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग भरतपुर के संयुक्त निदेशक ने भी रिपोर्ट में पैरोल देने की सिफारिश की थी। परंतु भरतपुर एसपी की रिपोर्ट के आधार पर उसके पैरोल पार्थना पत्र को खारिज कर दिया गया।

होली के उत्सव पर रंगों में रंगा राजस्थान

जैसलमेर की गलियों से पुष्कर के घाटों तक होली का उल्लास

जयपुर।

राजस्थान में मंगलवार होली (धुलंडी) मनाई गई। हर ओर उमंग और उल्लास का माहौल रहा। सड़कों पर टोलियां निकलीं। प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों- स्वर्ण नगरी जैसलमेर और तीर्थनगरी पुष्कर में यह पर्व भव्यता और अनूठी परंपराओं के साथ मनाया गया. वहीं, डीडवाना की अनूठी होली में गैर इतिहास परंपरा और संस्कृति का अद्भुत संगम दिखा.

राजस्थान की स्वर्णनगरी के नाम से विख्यात जैसलमेर में इस वर्ष होली का पर्व अनूठे अंदाज में मनाया गया. सुनहरी हवेलियों,

ऐतिहासिक धरोहरों और लोकसंस्कृति से समृद्ध इस शहर में रंगों का त्योहार देसी-विदेशी मेहमानों के संग उल्लास और उमंग के साथ मनाया गया. प्रसिद्ध सोनार किला परिसर, गोपा चौक और अन्य प्रमुख स्थानों पर पर्यटकों की भारी भीड़ देखी गई. ढोल, नगाड़ों और चंग की थाप पर विदेशी सैलानी भी जमकर थिरके. रंगों की बौछार के बीच स्थानीय युवाओं ने उत्साह के साथ मेहमानों को गुलाल लगाया और शुभकामनाएं दीं.

गैर नृत्य की थाप पर झूमे पर्यटक

अजमेर जिले की तीर्थनगरी पुष्कर में होली का उल्लास पारंपरिक गैर नृत्य के साथ शुरू हो गया. अंतरराष्ट्रीय पुष्कर पशु मेले की तरह यहां की होली भी देश-विदेश में प्रसिद्ध है. होली से आठ दिन पूर्व से प्रारंभ हुए इस नृत्य में स्थानीय युवाओं ने परंपरा को जीवंत रखा है.

हालांकि ग्रहण के चलते कई जगहों पर लोगों ने आज के बजाय बुधवार को रंग खेलने का कार्यक्रम तय किया है. भीतरी शहर सहित कई गली-मोहल्लों में गैर की टोलियां मस्ती में दिखाई दीं. हर जगह होली का हुड़दंग नजर आया.

डीडवाना-कुचामन की अनूठी होली : आस्था और परम्पराओं के देश भारत में होली सिर्फ रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का उत्सव भी है. हर क्षेत्र की अपनी अलग पहचान है, लेकिन राजस्थान के डीडवाना में माली समाज द्वारा निकाली जाने वाली पारंपरिक 'होली गैर' इस विविधता में सबसे अलग और अनूठी मानी जाती है.

महाराष्ट्र के पालघर में केमिकल-प्लांट से ओलियम गैस का रिसाव

2600 लोगों को सुरक्षित जगह पर शिफ्ट किया

पालघर

महाराष्ट्र के पालघर जिले में स्थित एक केमिकल प्लांट में सोमवार दोपहर करीब 2 बजे ओलियम गैस का रिसाव हुआ है। अधिकारियों ने बताया कि सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड, एनडीआरएफ और आपातकालीन की कई टीमें मौके पर पहुंचीं। रेस्क्यू टीमें प्लांट से गैस रिसाव रोकने की कोशिश में लगी हैं। प्रशासन ने एहतियात के तौर पर इलाके से करीब 2600 लोगों को सुरक्षित जगहों पर शिफ्ट किया है। फिलहाल घटना में किसी के हताहत होने की जानकारी नहीं मिली है। पालघर के एसपी यतीश देशमुख ने

बताया- बोइसर स्थित भगेरिया केमिकल्स कंपनी में सोमवार दोपहर 2 बजे ओलियम गैस लीक होने की सूचना मिली। जिला प्रशासन और फायर ब्रिगेड गैस रिसाव को नियंत्रित करने के लिए ऑपरेशन चला रहे हैं। फिलहाल रिसाव जारी है। ओलियम गैस के कारण बोइसर के ऊपर सफेद धुएं जैसा बादल बन गया है।

उन्होंने बताया कि हवा की दिशा में आने वाले रिहायशी और औद्योगिक इलाकों को खाली कराया जा रहा है और इलाके में नाकाबंदी भी की जा रही है।

नहीं आया इंटरव्यू के लिए कॉल, आपने की होंगी ये 5 गलतियां

शायद आप कुछ समय से जॉब तलाश रहे हों और आपने अलग-अलग कंपनियों, अलग-अलग पदों पर आवेदन दिया हो। हर दिन आप यह काम करते हो लेकिन आपके पास अभी तक कोई रिस्पॉन्स नहीं आया हो, ना कोई कॉल, ना ई-मेल। आपके हताश होने से पहले, यहां कुछ जरूरी बातें दी जा रही है जो कि आप आवदेनों को भेजने के पहले एक बार फरि चेक कर लें।

हर आवेदन में एक ही सीवी और कवर लेटर तो नहीं यूज किया

हर जॉब अलग है और उस जॉब की जरूरत के हिसाब से सीवी में बदलाव की जरूरत होती है। आपको अपना सीवी कस्टमाइज करने के लिए समय निकालना चाहि और यह सोचना चाहिए कि ऐसा क्या बदलाव किया जाए कि आपको इंटरव्यू के लिए एचआर से कॉल आ जाए। अगर आपका सीवी हर जॉब के हिसाब से पर्सनलाइज्ड नहीं हुआ तो यह इग्नोर हो सकता है। एम्प्लॉयर्स यह बात नोटिस करते है कि आपके सीवी और कवर लेटर में एक ही बातें तो नहीं है। भीड़ से अलग दिखने के लिए आपको यह साबित करना होगा कि आप एक अच्छे एम्प्लॉई बन सकते हैं। ऐसी चीजें शामिल करें जिससे कंपनी ज्यादा आकर्षित हो।

आवेदन गलत जगह तो भेज नहीं दिया

जिस व्यक्ति को आवदेन भेजना है उसके नाम में कई आवेदक गलती से या मूर्खतावश गलती कर देते हैं। वशिष रूप से जब आप अलग-अलग जगहों पर अप्लाई कर रहे हैं तो एड्रेसी और कंपनी का नाम अपडेट करना आसानी से भूल सकते हैं। इतना ही नहीं नाम की स्पेलिंग में गलती भी भारी पड़ सकती है।

आप न्यूनतम योग्यता पर खरे नहीं उतरे हैं

आपको इंटरव्यू कॉल नहीं आएगा अगर आप अंडरक्वॉलिफाइड हैं। अगर आपके पास आवश्यकतानुसार अनुभव, शैक्षणिक योग्यता नहीं है या आपने उसी माहौल या इंडस्ट्री में काम नहीं किया है तो आपका सीवी बाहर कर दिया जाएगा।

याद रखें, आपको यह पता होना चाहिए कि आप योग्य है लेकिन आप रिकूटर के लिए केवल एक कागज का टुकड़ा हैं। वे आपके बारे में उतना ही जानते हैं जो आपका पिछला अनुभव कहता है। उन्हें कई सारे सीवी देखने होते हैं और वे कभी भी अपना समय ऐसे में व्यर्थ नहीं करेंगे या आपके बारे में ज्यादा जानने की कोशिश नहीं करेंगे।

क्या आप न्यूनतम योग्यता को पार कर गए हैं

अगर आप ओवरक्वॉलिफाइड हैं तो भी आपके पास कॉल नहीं आएगा। कोई भी कंपनी ऐसे व्यक्ति को हायर नहीं करेगी। ऐसे में आपका सीवी भी रिजेक्ट हो जाएगा और वे सीवी के ढेर में नए आवेदन पर नजर घुमाएंगे।

कॉन्टेक्ट डिटेल्स अपडेट किया

भेजने से पहले आपको सीवी आपको बार-बार चेक करना चाहिए। यह सुनिश्चित कर लें कि आपने आपका वर्तमान ई-मेल एड्रेस, मोबाइल नंबर और लैंडलाइन नंबर डॉक्यूमेंट्स में अपडेट कर लिया है। अगर आपने आपका पुराना सोशल मीडिया अकाउंट्स डिलीट कर दिया है तो यह सुनिश्चित कर लें कि आपने उसे सीवी से भी हटा दिया है। अगर आपने सोशल मीडिया अकाउंट्स में प्राइवेसी सेंटिंग कर रखी है तो एचआर को इसके जरिए संपर्क करने का मत कहिए।

भारत में मैनेजमेंट में करियर बनाने के इच्छुक युवाओं के बीच एमबीए इन मार्केटिंग हमेशा से एक लोकप्रिय स्पेशलाइजेशन रहा है। मगर अब डिजिटल युग के आने से मार्केटिंग के क्षेत्र में जबरदस्त बदलाव आया है और अब इसमें डिजिटल मार्केटिंग भी शामिल हो गई है।

अब डिजिटल मार्केटिंग में पा सकते हैं एमबीए डिग्री

पढ़ाई के क्षेत्र के रूप में डिजिटल मार्केटिंग का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा है कि अब मार्केटिंग और डिजिटल मार्केटिंग को एक ही माना जाने लगा है। यूं तो दोनों ही क्षेत्रों में मूल काम उत्पादों व सेवाओं का प्रमोशन तथा सेल्स है मगर डिजिटल मार्केटिंग में अपनाई जाने वाली रणनीतियां परंपरागत मार्केटिंग से बहुत अलग और कहीं अधिक प्रभावी होती हैं। डिजिटल मार्केटिंग के क्षेत्र की बढ़ती लोकप्रियता और इसके लगातार विस्तार को देखते हुए मैनेजमेंट गुरुओं ने एमबीए कोर्स के लिए डिजिटल मार्केटिंग में स्पेशलाइजेशन की अलग ब्रांच की जरूरत महसूस की। आज डिजिटल मार्केटिंग में एमबीए का विकल्प तो उपलब्ध है मगर कई विद्यार्थियों में इस बात को लेकर भ्रम की स्थिति है कि मार्केटिंग और डिजिटल मार्केटिंग में क्या अंतर है और वे इन दोनों में से किस स्पेशलाइजेशन का चयन करें। तो चलिए, डिजिटल मार्केटिंग के बारे में थोड़ा और विस्तार से जानते हैं।

डिजिटल मार्केटिंग से कैसे अलग

जहां 'मार्केटिंग' में सभी प्रकार की मार्केटिंग आती है, वहीं 'डिजिटल मार्केटिंग' में केवल डिजिटल माध्यमों द्वारा की गई मार्केटिंग शामिल है। इनमें वेबसाइट, सोशल नेटवर्क, बैनर ऐड, गूगल ऐड, सर्च रिजल्ट, यूट्यूब वीडियो आदि आते हैं। परंपरागत मार्केटिंग में विज्ञापनदाता से उपभोक्ता की ओर सूचना का एकतरफा प्रवाह होता है। वहीं डिजिटल माकेटिंग में दोतरफा संवाद संभव है। परंपरागत मार्केटिंग में जहां विज्ञापन की लागत बहुत अधक आती है, वहीं डिजिटल मार्केटिंग में यह कम रहती है। परंपरागत मार्केटिंग कैंपेन काफी पहले से प्लान किए जाते हैं मगर डिजिटल कैंपेन तात्कालिक भी हो सकते हैं।

एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग

कई युवाओं का तर्क होता है कि केवल डिजिटल मार्केटिंग में एमबीए कर अपनी पढ़ाई का स्कोप सीमित करने के बजाय मार्केटिंग में एमबीए करना बेहतर है। यह बात अपनी जगह सही हो सकती है मगर आप जरा डिजिटल मार्केटिंग को भविष्य के नजरिये से भी देखें। पिछले एक दशक में सारे बिजनेस घरानों ने अपना ध्यान मार्केटिंग के परंपरागत माध्यमों से हटाकर डिजिटल माध्यमों पर केंद्रित कर दिया है। डिजिटल मार्केटिंग की लोकप्रियता के कई कारण हैं, जिनमें प्रमुख हैं कम लागत, तत्काल प्रतिसाद, लचीलापन, सुविधा और प्रभावशीलता। कई जानकार तो यह भी कहते हैं कि आज के दौर में अगर आपने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मार्केटिंग नहीं की, तो ग्राहक आपसे दूर ही रहेंगे। इसमें कोई शक नहीं कि आने वाले समय में सारी मार्केटिंग डिजिटल प्लेटफॉर्म की ओर ही जाएगी। इस प्लेटफॉर्म पर खास तरह की मैनेजमेंट स्किल की जरूरत होती है। इसीलिए एमबीए इन डिजिटल मार्केटिंग एक बेहतर तथा आकर्षक करियर ऑप्शन बन गया है।

क्या है स्कोप

हमारे यहां अब भी यह फील्ड अपने शुरूआती दौर में है और इसके बड़ी तेजी से विस्तार लेने की उम्मीद है। डिजिटल मार्केटिंग में एमबीए के विद्यार्थियों को तकनीकी बुनियाद तथा डिजिटल लैंग्वेज के कॉन्सेप्ट्स से रूबरू कराया जाता है। इसमें ये विषय भी शामिल होते हैं : वेब एनालिटिक्स, एडवर्टाइजिंग कम्युनिकेशन, बायर बिहेवियर, मार्केटिंग मैनेजमेंट, बी2बी ई-मार्केटिंग, इंटरनेट मार्केटिंग स्ट्रैटेजी आदि। भविष्य में इनमें सोशल मीडिया मार्केटिंग, कंटेंट मार्केटिंग, सर्च इंजिन मार्केटिंग आदि के भी शामिल किए जाने की संभावना है।

पे-पैकेज

काफी नई फील्ड होने के बावजूद डिजिटल मार्केटिंग वेतन के लिहाज से बेहद आकर्षक है। एक नया डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर 4 से 5 लाख रुपए का वार्षिक पैकेज पा सकता है। अनुभव के साथ इसमें तीव्रता से वृद्धि होती है। 5 से 7 साल का अनुभवी डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर 10-12 लाख का वार्षिक पैकेज पा सकता है।

करियर ऑप्शन

डिजिटल मार्केटिंग में डिग्री लेने के बाद करियर के कई ऑप्शन खुले होते हैं। फिलहाल हम इनमें से 3 सबसे बेहतर ऑप्शंस की चर्चा करेंगे।

डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर

इन्हें मार्केटिंग की भाषा में 'बज क्रिएटर' भी कहा जाता है। ये कस्टमर बिहेवियर डेटा पर काम करते हुए डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मार्केटिंग की ऐसी रणनीति तैयार करते हैं, जिससे उस उत्पाद या सेवा के प्रति उपभोक्ता की जिज्ञासा जागे। ईमेल मार्केटिंग, ईकॉमर्स, सोशल मीडिया कैंपेन आदि इनके काम का हिस्सा हैं। डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर के रूप में जॉब के अवसर अकेले इस साल ही 12 प्रतिशत की दर से बढ़ने की उम्मीद है। अगर आप डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर के रूप में करियर बनाना चाहते हैं, तो बेहतर होगा कि आप कोडिंग, वेब डिजाइन, एप्लिकेशन डेवलपमेंट, मार्केटिंग इकोनॉमिक्स तथा जनरल मैनेजेरियल एप्टिट्यूड में पारंगत हो जाएं।

इंटरनेट मार्केटिंग मैनेजर

अगर आपमें डेटा कलेक्शन और प्रोसेसिंग का हुनर है, तो आप इस फील्ड में करियर बना सकते हैं। इंटरनेट मार्केटिंग मैनेजर को मुख्य रूप से मार्केट रिसर्च एनालिस्ट के रूप में काम करना होता है। वे कस्टमर बिहेवियर डेटा का अध्ययन कर यह तय करते हैं कि उत्पाद या सेवा की बिक्री की कितना संभावना है। इसमें एमबीए की डिग्री के अलावा मार्केट रिसर्च एंड एनालिसिस में सर्टिफिकेशन आपके काम आएगा।

डिजिटल सेल्स मैनेजर

मार्केटिंग व सेल्स एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सो कई कंपनियां डिजिटल सेल्स की जिम्मेदारी डिजिटल मार्केटिंग मैनेजमेंट प्रोफेशनल को सौंपती हैं। यदि आपको डिजिटल मीडिया व निजता कानूनों, ब्राण्ड मैनेजमेंट, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स आदि का ज्ञान है, तो डिजिटल सेल्स मैनेजर के रूप में यह आपको बहुत काम आएगा।

साइंस स्टूडेंट्स के लिए इस क्षेत्र में ढेरों हैं संभावनाएं

विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आए दिन नई-नई शाखाएं जुड़ रही हैं। नैनो टेक्नोलॉजी भी तुलनात्मक रूप से एक नया क्षेत्र है। नैनो टेक्नोलॉजी के विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर देश-विदेश में छलांगें लगाकर बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। नैनो टेक्नोलॉजी को 'साइंस ऑफ मिनिएचर' अर्थात लघुतर का विज्ञान भी कहा जाता है। जब कोई वस्तु या सामग्री नैनो डाइमेंशन (10-9 मीटर = 1 नैनोमीटर) में बदल जाती है, तो उसके भौतिक, रासायनिक, चुंबकीय, प्रकाशीय, यांत्रिक और इलेक्ट्रिक गुणों में बड़ा भारी परिवर्तन आ जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो नैनो टेक्नोलॉजी एक ऐसा विषय क्षेत्र है, जिसमें नए अवसरों की भरमार है। नैनो टेक्नोलॉजी वैज्ञानिकों को व्यावहारिक सीमाओं से परे जाकर आणविक स्तर पर प्रयोग करने की सुविधा प्रदान करती है।

हर क्षेत्र में पैठ

नैनो टेक्नोलॉजी वर्तमान में मानवीय जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में प्रवेश कर चुकी है। यह तकनीक बायोसाइंस, मेडिकल साइंस, पर्यावरण विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, कॉस्मेटिक्स, सिक्योरिटी, फैब्रिक्स और विविध क्षेत्रों में चमत्कार कर रही है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि नैनो टेक्नोलॉजी प्रत्येक क्षेत्र जैसे मेडिसिन, एयरोस्पेस, इंजीनियरिंग, विभिन्न उद्योगों और तकनीकी क्षेत्रों, स्वास्थ्य और अन्य क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगी। कुल मिलाकर ऐसा कोई क्षेत्र नहीं होगा, जो नैनो टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल नहीं करेगा।

आर एंड डी पर आधारित

आने वाले समय में नैनो टेक्नोलॉजी के फायदों को देखते हुए पूरे विश्व में अकादमिक स्तर पर इसे एक विषय के रूप में अपनाया जा रहा है। नैनो टेक्नोलॉजी के पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स हमारे देश में उपलब्ध हैं। एमटेक और एमएससी कोर्स में प्रवेश के लिए फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी, बायोइंफॉर्मेटिक्स, इंस्ट्रूमेंटेशन आदि विषयों से ग्रेजुएशन कर चुके विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं। एडमिशन प्रवेश परीक्षा के आधार पर दिया जाता है।

नैनो टेक्नोलॉजी पाठ्यक्रम का स्वरूप मूलत: रिसर्च एवं डेवलपमेंट (आर एंड डी) पर आधारित होता है। इसके पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को पहले संबंधति विषय के आधारभूत सिद्धांतों से परिचित कराया जाता है। इसके बाद इस तकनीक के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग के अनुरूप अप्लाइड रूप देकर अन्य विषयों की जानकारी दी जाती है, ताकि पाठ्यक्रम रोचक, वस्तुनिष्ठ व ज्ञान पर आधारित बन सके। इसमें पदार्थ के भौतिक, रासायनिक तथा जैविक गुणों का सूक्ष्मतम अध्ययन कराया जाता है। पाठ्यक्रम की विषयवस्तु में क्वांटम थ्योरी, लिथोग्राफी, कार्बनिक और अकार्बनिक नैनो मटेरियल, स्पेक्ट्रोग्राफी, ऑप्टिकल माइक्रोस्कोपी, एक्स-रे डिफ्रैक्शन, रमन प्रभाव, नैनो बायोसाइंस, जीन स्ट्रक्चर आदि शामिल हैं।

करियर के कई विकल्प

नैनो टेक्नोलॉजी का अध्ययन करने वालों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में करियर के अच्छे विकल्प उपलब्ध हैं। यह तकनीक रक्षा, सैन्य सामग्री निर्माण, फॉरेंसिक साइंस, इलेक्ट्रॉनिक्स, आईटी, ऊर्जा आदि क्षेत्रों में रोजगार के अच्छे अवसर प्रदान करती है। नैनो टेक्नोलॉजी पर्यावरण, कृषि, टेक्सटाइल जैसे क्षेत्रों में भी रोजगार प्रदान करती है। इस तकनीक का प्रयोग कैंसर के इलाज में भी किया जा रहा है। इसलिए स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र में यह तकनीक अच्छी करियर की संभावनाएं रखती है। नैनो टेक्नोलॉजी के अध्यापन के क्षेत्र में भी करियर बनाया जा सकता है।

खुल रहे हैं नए द्वार

नैनो टेक्नोलॉजी के द्वारा विभिन्न तत्वों की बॉण्ड संरचना में परिवर्तन करने पर या उनका आपस में संयोग करने पर एकदम नए तत्व का निर्माण भी किया जा सकता है। इस विषय में अभी बहुत-से नए आयाम खोजे जाने बाकी हैं तथा इसके प्रयोग से भौतिकी के लगभग सभी सिद्धांतों को यथार्थ रूप दे पाना संभव हो सकता है। इसलिए यह विषय शोधर्थियों के लिए कार्यक्षेत्रों के नए द्वार खोलता है। इस टेक्नोलॉजी को और भी उन्नात बनाने तथा भविष्य में इस क्षेत्र में नई संभावनाओं की तलाश करने के लिए भारत सरकार भी पहल कर रही है। अमेरिका का नेशनल साइंस फाउंडेशन 'नेशनल नैनो टेक्नोलॉजी इनिशिएटिव' नामक योजना चला रहा है। इसके साथ ही विश्व के तमाम उन्नत देश भी इस पर अलग-अलग नामों से योजनाएं चला रहे हैं। अनेक देश इस विषय में शोध के लिए प्रतिवर्ष अरबों रुपए खर्च कर रहे हैं। स्पष्ट है कि इसके चलते इस क्षेत्र में जॉब्स के भरपूर अवसर निर्मित होने जा रहे हैं। नैनो टेक्नोलॉजी को आज जिन प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, वे हैं शिक्षित, प्रशिक्षित तथा कुशल कर्मचारियों की कमी। नैनो टेक्नोलॉजी विभिन्न प्रमुख नवाचारों के विकास में संलग्न है और इस क्षेत्र में नित नए प्रयोग हो रहे हैं, जिससे कुशल मानवशक्ति को रोजगार के उजले अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।

प्रमुख संस्थान

- आईआईटी, दिल्ली
- आईआईटी, गुवाहाटी
- आईआईटी, कानपुर
- जवाहरलाल नेहरू सेंटर फॉर एडवांस साइंटिफिक रिसर्च, बेंगलुरू
- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बेंगलुरू
- नेशनल केमिकल लैबोरेट्री, पुणे
- एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा
- दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

किसे सुनाएं अपनी पीड़ा – सुनवाई को तरस रहे पेंशनर

कागज़ों में सीमित आरजीएचएस योजना, इलाज को भटकते बुजुर्ग, उम्र के आखिरी पड़ाव पर व्यवस्था की बेरुखी बनी सबसे बड़ी बीमारी...

स्मार्ट हलचल | शाहपुरा (भीलवाड़ा)

जिस उम्र में इंसान को सहारे और संवेदनशील व्यवस्था की जरूरत होती है, उसी उम्र में शाहपुरा के पेंशनर्स सरकारी व्यवस्था की उदासीनता का दर्द झेलने को मजबूर हैं। सरकार की आरजीएचएस (राज-स्थान गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम) योजना, जिसे कर्मचारियों और पेंशनर्स के स्वास्थ्य सुरक्षा कवच के रूप में लागू किया गया था, अब क्षेत्र में कागज़ों तक सिमटती नजर आ रही है। हालात ऐसे बन गए हैं कि बुजुर्ग मरीज इलाज की आस लेकर अस्पतालों के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन राहत कहीं दिखाई नहीं दे रही। कहावत है कि 'डूबते को तिनके का सहारा भी काफी होता है', लेकिन यहां तो तिनका भी नसीब नहीं हो रहा। डॉक्टरों की अनुपलब्धता ने पूरी व्यवस्था की सच्चाई उजागर कर दी है। जिन चिकित्सकों के भरोसे पेंशनर्स दवाई और उपचार प्राप्त कर रहे थे, उन्हें भी नोटिस जारी कर दवाई लिखने से मना कर दिया गया, जिससे मरीजों की परेशानी कई गुना बढ़ गई है। अब स्थिति यह है कि योजना का नाम तो है, लेकिन सुविधा का अस्तित्व नजर नहीं आता।

व्यवस्था की हालत 'न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी' जैसी हो चुकी है। योजना का ढोल तो खूब पीटा गया, मगर जमीन पर सुविधाएं ऊंट के मुंह में जीरा साबित हो रही हैं। जिम्मेदार विभाग मानो कानों में तेल डालकर बैठा है और पेंशनर्स बेबस निगाहों से राहत की उम्मीद लगाए हुए हैं। उम्र और बीमारी के बीच यह संघर्ष उनके लिए किसी सजा से कम नहीं लग रहा।

पेंशनर्स का दर्द उनकी बातों में साफ झलकता है। उनका कहना है कि जीवन भर सरकार की सेवा करने के बाद आज इलाज के लिए भटकना सबसे बड़ी विडंबना है। जब शरीर जवाब देने लगे और दवाइयों की जरूरत बढ़ जाए, तब व्यवस्था का मुंह मोड़ लेना मन को तोड़ देता है। कई बुजुर्गों ने भावुक होकर कहा कि अब समझ नहीं आता अपनी पीड़ा किसे सुनाएं, क्योंकि सुनने वाला कोई नजर नहीं आता।

'दवा की आस में निकले थे घर से हम मगर,
लाइनें मिलीं, बंद दरवाज़े और इंतज़ार मिला,
जिस योजना को सहारा समझ बैठे थे हम,
वहीं से हर बार बेबसी का उपहार मिला।'

स्थानीय कर्मचारियों और पेंशनर्स ने प्रशासन से जल्द व्यवस्था सुधारने की मांग करते हुए चेतावनी दी है कि यदि आरजीएचएस योजना को प्रभावी रूप से लागू नहीं किया गया तो मजबूर होकर आंदोलन का रास्ता अपनाना पड़ेगा। अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर जीवन भर व्यवस्था को संभालने वाले पेंशनर्स को अपने ही हक के इलाज के लिए कब तक इंतजार करना पड़ेगा।

बैंक में बदमाश ने दिखाई हाथो की सफाई

90 हजार रु और दास्तेवाज से भरी थैली लेकर हुआ फरार

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

भीलवाड़ा जिले में चोर उचक्के और बदमाशो के हौसले किस कदर बुलंद है उसका अंदाजा इस मामले से लगाया जा सकता है । कोटड़ी कस्बे में स्थित एसबीआई बैंक से दिनदहाड़े एक बदमाश बड़ी तरकीब से हाथो की सफाई दिखाकर ग्राहक के रुपए और दस्तावेजों से भरी थैली लेकर भाग निकला । यह पूरी वारदात सीसीटीवी में कैद हो गई जिसमे एक संदिग्ध व्यक्ति ग्राहक की थैली से पैसे निकालते हुए नजर आ रहा है । थैली में नकद के साथ कुछ आवश्यक दस्तावेज भी मौजूद थे । पीड़ित मदन लाल गुर्जर ने बताया की सोमवार को वह पैसे जमा कराने के लिए कोटड़ी एसबीआई शाखा गए थे वह पर्ची भर रहे थे की इस दौरान उनके थैली जिसमे 90 हजार और आवश्यक दस्तावेज की कोपियां थी जिसे अज्ञात व्यक्ति चुराकर ले गया बाद में इस संबंध में पीड़ित ने कोटड़ी थाने में दर्ज करवाया । पुलिस सीसीटीवी की मदद से आरोपी को तलाशने में जुट गई है ।

खेतों में पैंथर का खौफः कास्या में मादा पैंथर और शावकों की दस्तक, वन विभाग ने जारी की एडवाइजरी

स्मार्ट हलचल

बिजौलिया। बिजौलिया क्षेत्र के कास्या गांव में उस समय सनसनी फैल गई जब खेतों के बीच रविवार रात मादा पैंथर और उसके शावकों की मौजूदगी की सूचना सामने आई। सूचना मिलते ही पूरे इलाके में दहशत का माहौल बन गया।

मांडलगढ़ के रेंजर मनिंदर पाल सिंह ने बताया कि वन विभाग की टीम मौके पर पहुंचकर पैंथर और उसके बच्चों की तलाश में जुटी हुई है। पैंथर कास्या में अलग अलग जगह अपने तीन शावकों के साथ खेतों के आसपास घूमती देखी गई है, जिससे अकेले खेतों में काम करने वाले किसानों और पशुपालकों में खासा डर है। विभाग ने सख्त एडवाइजरी जारी करते हुए ग्रामीणों को अकेले खेतों में न जाने, समूह में काम करने और हर समय सतर्क रहने की हिदायत दी है। खास तौर पर रात के समय घरों से बाहर नहीं निकलने की चेतावनी दी गई है। वहीं रेंजर द्वितीय विमल रैगर ने बताया कि मादा पैंथर अपने बच्चों के साथ होने पर अधिक सतर्क और आक्रामक हो सकती है। ऐसे में किसी भी प्रकार की छेड़छाड़, पत्थरबाजी या पास जाने की कोशिश खतरनाक साबित हो सकती है। फिलहाल वन विभाग द्वारा पैंथर की साइटिंग वाले जगह पर एक पिंजरा और ट्रेप कैमरे लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि ग्रामीणों से अपील की गई है कि पैंथर या उसके शावकों की हलचल दिखाई देने पर तुरंत सूचना दें और दूरी बनाए रखें। फिलहाल पूरे क्षेत्र में निगरानी बढ़ा दी गई है और रेस्क्यू के प्रयास जारी हैं।

उत्पादन नहीं रोककर उपयोगकर्ता से छीना-झपटी करना अन्याय- राष्ट्रसंत कमलमुनि

स्मार्ट हलचल

आकोला। मांडलगढ़ क्षेत्र की समाजसेविका एवं जैन दिवाकर विचार मंच रजिस्टर्ड नई दिल्ली के राष्ट्रीय मंत्री मधु संचेती ने बताया कि कांचीपुरम में विराजित कमलमुनि जी महाराज कमलेश ने कहा है कि सरकारें आती है, वह अपने नियम व कानून बनाकर कार्य करती है। हर सरकार अच्छे शासन के साथ जनता की सेवाएँ करने के भरसक प्रयास करती है तथापि कुछ नियमों की आड़ में शासन-तन्त्र कुछ कार्यवाहियों में ऐसी कार्यशैली अपनाने लगता है, जो जनमानस पस पर सीधे चोट करने लगता है एवं वही कार्यवाहियों तरकार की लोकप्रियता व जन विश्वास को खण्ड-खण्ड करने लगती है, यदि ऐसा होने लगे तो सरकार को अपने काम-काजों की निश्चित ही समीक्षा करनी चाहिए। उक्त विचार देश के अनेकों प्रदेशों के राजकीय अतिथि एवं जैन धर्म संघ के कई प्रमुख संगठनों के पदाधिकारी राष्ट्रसंत कमलमुनि जी म. 'कमलेश' ने व्यक्त किए। उदाहरणार्थ उन्होंने प्रश्न उठाया कि देश विशेषतः कई प्रदेशों में सरकार प्लास्टिक के विरुद्ध अभियान चलाकर उन छोटे-छोटे व्यवसायियों, ठेले खोमचे, होटलों वालों, फल-सब्जी विक्रेताओं से प्लास्टिक जब्ती एवं सरकारी शक्ति का जिस ढंग से प्रदर्शन कर रही है, क्या यह ठीक है? इस मामले में होना तो यह चाहिए कि प्रतिबन्धित प्लास्टिक का उत्पादन ही न हो। उत्पादन ही नहीं होगा तो फिर उपयोग कैसे होगा। प्रतिबन्ध उपयोगकर्ता पर नहीं, उत्पादनकर्ता पर होना चाहिए। प्रतिबन्धित वस्तुओं का उत्पादन कहाँ हो रहा है? क्यों हो रहा है? क्यों होने दिया जा रहा है? यह विचारणीय प्रश्न होने चाहिए। यदि मिठाई पर प्रतिबन्ध हो तो मिठाई नहीं बनने देनी चाहिए, बनने के बाद खाने वाले को मारना कितना उचित है? यदि प्लास्टिक के उत्पादन को नहीं रोका जा रहा है तो प्रयोगकर्ता को क्यों परेशान किया जा रहा है? उपयोगकर्ता से छीना-झपटी, जब्ती, छापेमार कार्यवाही एवं चालान बनाकर उसे क्यों परेशान किया जा रहा है? यदि सरकार की मंशा ऐसी नहीं है तो क्या लोकसेवक ऐसी कार्यवाहियों को अंजाम दे रहे हैं, जिससे शासन के प्रति लोगों की नाराजगी बढ़ रही है? यदि ऐसा हो तो सरकार को निश्चित ही अपने काम-काज की समीक्षा करनी चाहिए।

राष्ट्रसंत ने कहाकि प्लास्टिक ही नहीं और भी कई ऐसी वस्तुओं पर प्रतिबन्ध हो सकता है, ऐसे मामलों में सबसे पहले उत्पादनकर्ता को पकड़ना चाहिए, उत्पादन पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए, ताकि वे वस्तुएँ बाजार में आ ही नहीं पाये। उन्होंने कहाकि बांस ही नहीं रहेगा तो बांसुरी कैसे बजेगी । सरकार फेक्ट्रियों पर प्रतिबन्ध न लगाकर प्रतिस्पर्धी युग में बड़ी मुश्किल से कारोबार चला रहे लोगों को छापेमार कार्यवाही से भयभीत करे, रोब झाड़े, परेशान करे, छोटे-छोटे लोगों से चालान काटकर सरकारी खजाना भरे, यह उनका पेट काटने जैसी कार्यवाही है, जो किसी लोकप्रिय शासन की निशानी नहीं हो सकती।

राष्ट्रसंत ने यह भी स्पष्ट किया कि एक ओर सरकारें छोटे उद्यमियों, कामगारों, मेहनतकश लोगों के हमदर्द होने की दुहाई देती है तथा उन्हीं के द्वारा नियुक्त लोकसेवकों की निरंकुश कार्यवाहियों पर ध्यान ही न हो तो आखिर उसका खामियाजा तो सरकार को भुगतना ही पड़ता है साथ ही आम लोगों के मन मस्तिष्क पर सरकार के प्रति विकृत छवि का निर्माण होता है हर चीज में कानून व नियम का भय नहीं बनना चाहिए ,कार्यवाहियां ऐसी होनी चाहिए जो आम लोगों के लिए परेशानी का सबब नहीं बने, राष्ट्रसंत सरकार के कामकाज व लोक व्यवहार विषय पर प्रवचन दे रहे थे।

ग्रामीणों ने जेसीबी लगाकर गंदगी से अटे नाले को किया साफ

स्मार्ट हलचल

लाडपुरा। प्रशासन की सुस्ती और रास्तों में फैली गंदगी से परेशान होकर अब ग्रामीणों ने खुद ही समाधान निकालना शुरू कर दिया है। लाडपुरा कस्बे के मुख्य मार्ग पर लंबे समय से गंदगी और कीचड़ से अटे नाले के कारण राहगीरों का निकलना दूभर हो रहा था। इस समस्या को देखते हुए स्थानीय युवाओं और ग्रामीणों ने एकजुट होकर निजी खर्च पर जेसीबी बुलवाई और नाले की सफाई कर रास्ते को सुगम बनाया।

मुख्य मार्ग पर नाले की गंदगी सड़क तक फैल रही थी, जिससे पैदल चलने वालों और वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। समस्या गंभीर होने पर ग्रामीण विष्णु माली, नरेश माली और संदीप सुथार ने नेतृत्व संभाला। इन युवाओं ने ट्रैक्टर, फावड़े और जेसीबी की मदद से नाले में जमा मलबे और गंदगी को पूरी तरह बाहर निकाला। इस कार्य में अन्य ग्रामीणों का भी भरपूर सहयोग रहा। अब यह रास्ता पूरी तरह गंदगी मुक्त हो गया है, जिससे लोगों ने राहत की सांस ली है।

सुवाणा के किसान मेले में बिजली चोरी को लेकर अधिकारियों में मतभेद...

वीसीआर बनाने से हिचक रहे अधिकारी

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुवाणा के हलेड मार्ग स्थित खेल मैदान में निजी व्यक्ति के संगठन मिवी किसान बाजार कृषक उत्पादक संगठन भीलवाड़ा की ओर से पिछले तीन दिनों तक लगाये गये तीन दिवसीय किसान मेले में आयोजकों द्वारा बिजली चोरी करने के बाद पकड़े जाने, वीसीआर भरने को लेकर अधिकारियों में ही मतभेद खुलकर सामने आये है। विभाग के आला अधिकारी वीसीआर भरने का निर्देश दे चुके है। जबकि वीसीआर भरने वाले अधिकारी/कर्मचारी बिजली चोरी करने वाले को बचाने में लगे हुए है।

सूत्रों के अनुसार मेले में आयोजकों द्वारा मीटर के पास सरकारी केबल को काटकर बिजली चोरी की जा रही थी। जिसकी कुछ किसानों द्वारा अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के ए.ई.एन. ग्रामीण हवा सिंह गुर्जर को शिकायत की, उन्होंने कनिष्ठ अभियन्ता आयुष माथुर को फोन पर मौके पर जाकर वीसीआर भरने के निर्देश दिये थे, मगर माथुर ने मौके पर नहीं पहुंचकर

सिर्फ मेले के ठीक सामने स्थित विद्युत विभाग की ग्रीड पर कार्यरत कर्मचारियों को भेजकर तारो को सही मीटर से जोड़ दिया। तब तक आयोजक दो-तीन दिन तक लगातार हजारों रुपए की बिजली चोरी कर चुके थे।

मेले में लगभग 50 से अधिक छोटी-बडी स्टॉल लगाए गई। प्रत्येक स्टॉल से 30 से 40 हजार रुपए आयोजकों द्वारा लिये गये थे। जिसके बदले में आयोजकों ने नगर निगम के दमकल वाहन, टेन्ट,चाय,पीने का पानी एवं बिजली की व्यवस्था की है। वहीं मेले में एक भी स्टॉल राज्य सरकार एवं भारत सरकार की नहीं लगाई गई जिसके चलते क्षेत्र के किसानों में रोष व्याप्त है।

किसान कालू भील, रामचंद्र नायक,भंवर चौधरी,भैरू चौधरी एवं बद्री बलाई ने बताया कि लक्ष्मण चैधरी मेले से किसानों को कोई फायदा नहीं मिल रहा, क्योंकि भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों के लिए बनाई गई लाभकारी एवं किसान हितैषी योजनाओं की जानकारी देने वाला कोई नहीं है। वहीं बिजली विभाग के उच्च अधिकारी वीके संचेती व ओम प्रकाश खटोड ने बताया कि वीसीआर भरने के निर्देश देने के बावजूद भी वीसीआर क्यों नहीं भरी गई, जांच की जायेंगी। लापरवाह अधिकारी के खिलाफ जांच कर कार्यवाही की जायेंगी।

19 जिलों में संगठित अपराधियों के विरुद्ध राजस्थान पुलिस की सर्जिकल स्ट्राइक

अवैध हथियार रखने वाले, इलाके में रंगदारी व अन्य अपराधी घटनाओं को अंजाम देने वाले गिरोह से संबंधित 1276 अपराधी चिन्हित; 214 गिरफ्तार, भारी मात्रा में अवैध हथियार एवं मादक पदार्थ जप्त

स्मार्ट हलचल | जयपुर

राजस्थान में भयमुक्त वातावरण सुनिश्चित करने के लिए महानिदेशक पुलिस श्री राजीव कुमार शर्मा के विजन को धरातल पर उतारते हुए संगठित गिरोहों के विरुद्ध पुलिस ने रविवार अलसुबह बड़ी घेराबंदी की। इस ऑपरेशन का मुख्य लक्ष्य अवैध हथियार रखने वाले, इलाके में रंगदारी व अन्य अपराधी घटनाओं को अंजाम देने वाले गिरोह से संबंधित नेटवर्क को जड़ से उखाड़ना था। यह कार्रवाई जयपुर व जोधपुर कमिश्नरेट सहित राज्य के 14 अन्य जिलों में की गई।

इस मिशन की कमान महानिदेशक स्पेशल ऑपरेशन्स श्री आनंद श्रीवास्तव को सौंपी गई। उनके कुशल निर्देशन में राजस्थान पुलिस की एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स ने मोर्चा संभाला। एडीजी श्री दिनेश एमएन और डीआईजी श्री योगेश यादव के सुपरविजन में इस पूरे ऑपरेशन का ब्लूप्रिंट तैयार किया गया। ग्राउंड लेवल पर कार्रवाई के लिए एसपी ज्ञान चंद यादव, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नरोत्तम वर्मा व सिद्धांत शर्मा और डीएसपी फूलचंद टेलर व भँवर लाल सहित अनुभवी पुलिस निरीक्षकों की टीम ने मैदान में मोर्चा संभाला। अन्य सभी जिलों में टारगेटेड अपराधियों की सूची साझा कर 'जीरो टॉलरेंस' के निर्देश दिए गए।

डीजीपी श्री शर्मा ने बताया कि सभी रेंज आईजी ने समस्त कार्रवाई की मॉनिटरिंग की एवं स्थानीय पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में फील्ड में पुलिस टीमों द्वारा कार्रवाई की गई।

चिन्हित अपराधी और पुलिस की दबिश

इस विशेष अभियान के लिए कुल 1,276 अपराधियों को टारगेट पर लिया गया था। आंकड़ों के अनुसार, इनमें रोहित गोदारा और लॉरेंस गैंग से संबंधित 383, स्थानीय गैंग के 534 और अन्य श्रेणियों के 359 इनामी व वांछित अपराधी चिन्हित किए गए थे। पुलिस की टीमों ने प्रदेश भर में इनके ठिकानों पर सघन दबिश दी।

अवैध हथियारों और मादक पदार्थों का जखीरा बरामद

पुलिस ने इस ऑपरेशन के दौरान भारी मात्रा में अवैध हथियार और ड्रग्स जब्त किए हैं: हथियार : आर्म्स एक्ट के तहत कुल 30 प्रकरण दर्ज कर 17 पिस्टल, 3 देशी कट्टे, 14 कारतूस, 6 चाकू और 6 छुरे बरामद किए गए।

ड्रग्स : एनडीपीएस एक्ट के 34 मामलों में पुलिस ने 1.166 किलो हेरोइन, 8.544 ग्राम स्मैक, 5.29 ग्राम एमडी, 300 ग्राम अफीम, 14.792 किलो गांजा और 26.08 किलो डोडा पोस्त जब्त किया। अफीम की खेती : झुंझुनू जिले में कार्यवाही करते हुए पुलिस ने 8,153 अफीम के पौधे भी बरामद किए हैं।

इनामी अपराधी और वांछितों की धरपकड़

अभियान के अंत तक पुलिस ने कुल 214 फरार और वांछित अपराधियों को गिरफ्तार करने में सफलता पाई है। इसमें 11 इनामी अपराधी, 157 वारंटी और 46 अन्य वांछित शामिल हैं। इसके अलावा विभिन्न जिलों से 32 वाहन और 19 मोबाइल व इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी साक्ष्य के तौर पर जब्त किए गए हैं।

हनुमानगढ़ और चूरू में बड़ी सफलता

हनुमानगढ़ में पुलिस ने नाकाबंदी के दौरान पंजाब की बंबीहा गैंग के दो गुर्गों को गिरफ्तार किया, जिनके पास से 11 पिस्टल और 22 मैगजीन बरामद हुई। ये हथियार इंदौर से पंजाब सप्लाई किए जाने थे। वहीं चूरू में सुरेश सेन नामक हार्डकोर अपराधी के घर पर दबिश दी गई, जहाँ से भारी मात्रा में अवैध शराब, 12 विभिन्न बैंक के कार्ड, पासबुक व चैक बुक और 5,30,600 नकद बरामद हुए। इसी जिले में विदेश में बैठे अपराधी महेंद्र डेलाना गिरोह के सदस्य धनराज उर्फ धन्ना को भी गिरफ्तार कर एक अवैध देशी कट्टा बरामद किया है, आरोपी कुचामन क्षेत्र में गंभीर आपराधिक वारदात को अंजाम देने की फिराक में था।

इस कार्यवाही के दौरान 428 गैंग सदस्यों के पूछताछ नोट और डोजियर तैयार किये ताकि भविष्य में उनके नेटवर्क को पूरी तरह ध्वस्त किया जा सके। इस विशेष अभियान के तहत राजस्थान पुलिस ने प्रदेश की विभिन्न पुलिस रेंज में एक साथ व्यापक कार्रवाई कर अपराध जगत में हड़कंप मचा दिया :

जयपुर रेंज में जयपुर के चारों जिलों सहित सीकर, झुंझुनू और कोटपूतली-बहरोड़ में सघन दबिश अभियान चलाया गया। जयपुर में 142 अपराधियों को चिन्हित कर 62 डोजियर तैयार किए गए। झुंझुनू में 194 बदमाशों के ठिकानों पर दबिश देकर 8,153 अफीम के पौधे जब्त किए गए। सीकर में 95 बदमाशों तथा कोटपूतली-बहरोड़ में 68 बदमाशों को चिन्हित कर कार्रवाई की गई, जहां 13 डोजियर तैयार कर दो वाहन जब्त किए गए।

बीकानेर रेंज में बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और चूरू जिलों में व्यापक स्तर पर कार्रवाई हुई। बीकानेर में 67 बदमाशों के खिलाफ दबिश देकर एनडीपीएस एक्ट के सात प्रकरण दर्ज किए गए और 62 किलो 155 ग्राम डोडा पोस्त सहित अन्य मादक पदार्थ जब्त किए गए। श्रीगंगानगर में 138 बदमाशों के ठिकानों पर कार्रवाई करते हुए 14 एनडीपीएस प्रकरण दर्ज कर 1 किलो 130.21 ग्राम हेरोइन, 11 किलो 870 ग्राम पोस्त और 200 ग्राम अफीम जब्त की गई। हनुमानगढ़ में 61 बदमाशों के खिलाफ कार्रवाई कर पंजाब की बंबीहा गैंग से 11 पिस्टल और 12 मैगजीन बरामद की गई। चूरू में 105 बदमाशों को चिन्हित कर पांच इनामी अपराधियों को गिरफ्तार किया गया।

जोधपुर रेंज में जोधपुर पूर्व-पश्चिम, जोधपुर ग्रामीण और फलोदी जिलों में दबिश दी गई। जोधपुर शहर में 51 बदमाशो के ठिकानों पर कार्रवाई कर आठ डोजियर/पूछताछ नोट तैयार किए गए। जोधपुर ग्रामीण में 12 बदमाशों के खिलाफ कार्रवाई कर एक अवैध हथियार बरामद किया गया तथा तीन इनामी अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। फलोदी में 157 चिन्हित बदमाशों के विरुद्ध कार्रवाई कर 14 किलो 210 ग्राम डोडा पोस्त बरामद किया गया और तीन फरार इनामी बदमाश गिरफ्तार किए गए।

अजमेर रेंज में अजमेर शहर, नागौर और डीडवाना-कुचामन जिलों में कार्रवाई की गई। अजमेर में 18 बदमाशों को चिन्हित किया गया। नागौर में एनडीपीएस एक्ट के तहत एक प्रकरण दर्ज कर 14.215 किलोग्राम गांजा बरामद किया गया तथा एक इनामी सहित कई वारंटी अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। डीडवाना-कुचामन में 166 बदमाशों के ठिकानों पर दबिश देकर सात इनामी अपराधियों को गिरफ्तार कर तीन वाहन जब्त किए गए।

कोटा रेंज में कोटा शहर में 119 अपराधियों को चिन्हित कर आर्म्स एक्ट के 17 प्रकरण दर्ज किए गए, जिनमें पिस्टल, देसी कट्टा, कारतूस और धारदार हथियार बरामद किए गए। एनडीपीएस एक्ट के चार प्रकरणों में 556 ग्राम गांजा और 1.44 ग्राम स्मैक जब्त की गई। दस इनामी अपराधियों सहित कई वारंटी आरोपियों की गिरफ्तारी की गई तथा 170 बीएनएसएस के तहत 187 आदतन अपराधियों को भी हिरासत में लिया गया। प्रदेश के चिन्हित जिलों में एक साथ की गई इस समन्वित कार्रवाई में बड़ी मात्रा में मादक पदार्थ, अवैध हथियार और वाहन जब्त किए गए तथा इनामी, वारंटी और आदतन अपराधियों की गिरफ्तारी से संगठित अपराध के नेटवर्क पर प्रभावी प्रहार किया गया।

ग्रामीण बेड़ियों को तोड़कर बनीं वैश्विक कलाकार

नृत्य से सामाजिक बदलाव की राह पर प्रियाक्षी अग्रवाल

पितृसत्ता के खिलाफ संघर्ष से अंतरराष्ट्रीय मंच तक सफर, महिला सशक्तिकरण की आवाज बनी बनेड़ा की बेटी

स्मार्ट हलचल

शाहपुरा। भीलवाड़ा जिले के छोटे से गांव बनेड़ा में जन्मी प्रियाक्षी अग्रवाल की कहानी साहस, संघर्ष और आत्मविश्वास की मिसाल बन चुकी है। एक ऐसे ग्रामीण और गहरे पितृसत्तात्मक समाज में पली-बढ़ी प्रियाक्षी ने न केवल सामाजिक बंधनों को तोड़ा, बल्कि नृत्य को अपनी पहचान और बदलाव का माध्यम बनाया।

प्रियाक्षी बताती हैं कि उन्हें महज छह साल की उम्र से नृत्य से प्रेम हो गया था। लेकिन गांव के माहौल में यह सपना देखना आसान नहीं था। लोग अक्सर तंज कसते थेकृ 'नाचने वाली बनेगी क्या?' नृत्य को सम्मानजनक पेशा नहीं माना जाता था और लड़कियों की उच्च शिक्षा को भी हतोत्साहित किया जाता था। इस कारण उन्हें शारीरिक और मानसिक हिंसा तक झेलनी पड़ी। इसके बावजूद उनके भीतर नृत्य करने की जिद आलोचना और डर से कहीं ज्यादा मजबूत थी।

सोलह वर्ष की उम्र में प्रियाक्षी ने अपने सपने को पूरा करने के लिए घर छोड़ने का कठिन फैसला किया। बनेड़ा से निकला उनका यह सफर दिल्ली, मुंबई और अहमदाबाद होते हुए अब यूरोप तक जा पहुंचा है। उन्होंने अहमदाबाद में प्रसिद्ध नृत्यांगना और सामाजिक कार्यकर्ता मल्लिका साराभाई के साथ प्रशिक्षण और काम किया, जहां उन्होंने भरतनाट्यम, रंगमंच और कलरिपयट्टू जैसी विधाओं में दक्षता हासिल की।

प्रियाक्षी का चयन कोरियोमेंडस इंटरनेशनल मास्टर इन डांस नॉलेज, प्रैक्टिस एंड हेरिटेज कार्यक्रम के लिए हुआ, जिसके तहत उन्हें यूरोप में नृत्य मानवविज्ञान में स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए पूर्ण छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। यह उपलब्धि उनके संघर्ष और मेहनत का प्रतिफल थी।

भरतनाट्यम सीखने के लिए उन्होंने असाधारण मेहनत की। सामान्य तौर पर जहां किसी विद्यार्थी की सप्ताह में तीन घंटे की कक्षा होती थी, वहीं प्रियाक्षी की रोजाना चार घंटे की कक्षा होती थी। यह सिलसिला लगातार साढ़े तीन साल चला। इस दौरान उन्होंने अपनी आजीविका के लिए क्यूरेटर का काम किया, मार्केटिंग मैनेजर की नौकरी की और अपने खर्च खुद उठाए। उनका दैनिक जीवन बेहद कठिन थाकृसुबह आठ बजे घर से निकलना और रात ग्यारह बजे लौटना उनकी दिनचर्या बन गई थी। इसके बावजूद वे संतुष्ट नहीं हुईं और आगे बढ़कर केरल जाकर कलरिपयट्टू सीखने का निर्णय लिया।

आज प्रियाक्षी 18 से अधिक देशों में नृत्य प्रदर्शन कर चुकी हैं और नृत्य सिखा चुकी हैं। नॉर्वे, डेनमार्क, जर्मनी, जापान और जमैका जैसे देशों में उन्होंने भारतीय नृत्य को सामाजिक मुद्दों के साथ जोड़ा। उनके नृत्य में केवल कला नहीं, बल्कि स्त्री स्वतंत्रता, अधिकार और आत्मसम्मान की आवाज गूंजती है।

हाल ही में उन्होंने जयरंगम महोत्सव में नारीवादी प्रस्तुति दी, जिसमें महिलाओं के संघर्ष और आत्मनिर्णय की कहानी को मंच पर उतारा गया। प्रस्तुति के बाद जब महिलाएं उनकी आंखों में आंसू और दिल में कृतज्ञता लेकर पहुंचीं, तो प्रियाक्षी को लगा कि उनका नृत्य केवल मंचीय कला नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद बन गया है।

प्रियाक्षी कहती हैं कि महिलाओं को आगे बढ़कर अपने जुनून को जीना चाहिए। उनकी मान्यता है कि जो उमंग मन में है, उसे दबाना नहीं चाहिए। यदि कोई महिला लक्ष्य तय कर ईमानदारी से मेहनत करे, तो परिवार और समाज भी धीरे-धीरे साथ देने लगते हैं। मूल रूप से बनेड़ा की रहने वाली प्रियाक्षी वर्तमान में अहमदाबाद में रह रही हैं। उनका कहना है कि वे नृत्य के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आगे लाना चाहती हैं और इसके लिए जो भी संभव होगा, वह करेंगी।

सबसे भावुक पहलू यह है कि आज वही माता-पिता और गांववाले, जिन्होंने कभी उनके सपनों पर सवाल उठाए थे, अब उनकी उपलब्धियों पर गर्व करते हैं। बनेड़ा की बेटी अब अंतरराष्ट्रीय पहचान बना चुकी है।

प्रियाक्षी अग्रवाल की कहानी यह सिद्ध करती है कि कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव का प्रभावी हथियार भी बन सकती है। उनका सफर उन तमाम लड़कियों के लिए प्रेरणा है, जो आज भी समाज के डर से अपने सपनों को दबाए बैठी हैं। यह कहानी नृत्य की नहीं, बल्कि हिम्मत की है और यही इसे साधारण सफलता से ऊपर उठाकर बदलाव की मिसाल बनाती है।

भीलवाड़ा में धूमधाम से मनाया होलिका दहन का त्यौहार

कही जलाई कंडो की होली, श्मशान में खेली राख से होली

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

भीलवाड़ा जिले भर में सोमवार को होलिका दहन का त्यौहार धमुधाम और उत्साहपूर्वक मनाया गया । शुभ मुहूर्त और विधि विधान पूर्वक अलग अलग जगहों पर होलिका का दहन किया गया । हरनी गांव में चांदी की होलिका और सोने के प्रहलाद की बैंड बाजों के साथ सवारी निकली गई । अग्रवाल उत्सव भवन में 11 हजार कंडो और कपूर के साथ होलिका का दहन किया । वही भीलवाड़ा के पंचमुखी मोक्षधाम में हर बार की तरह इस बार भी परंपरागत अनुसार भैरू जी की सवारी निकाली और भक्तो ने राख से होली खेली । मंगलवार ओर बुधवार दो दिन भीलवाड़ा शहर सहित जिले भर में दुलहंडी का पर्व मनाया जाएगा । हवा में खूब उड़ेगा गुलाल डीजे पर जमकर थिरकेंगे युवा और बच्चे।

गंगापुर में गोबर के उपलों से होलिका दहन, पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिलाया

स्मार्ट हलचल

गंगापुर। होली के पावन अवसर पर सोमवार शाम भूत बावजी मंदिर प्रांगण में परंपरागत तरीके से होलीका दहन समारोह आयोजित किया गया, लेकिन इस बार एक अलग तरीके से। पेड़ों की लकड़ियों की बजाय गाय के गोबर के उपलों (गोबर कंडों) का उपयोग कर होलिका दहन किया गया, जिससे पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी लोगों तक पहुंचाया गया

समारोह में बड़ी संख्या में श्रद्धालु और स्थानीय परिवार शामिल हुए। मंदिर समिति के सदस्यों ने बताया कि गोबर के उपलों से दहन करने का निर्णय इस बार पर्यावरण व वायु प्रदूषण को घटाने की भावना से लिया गया। इसके अलावा यह कदम पारंपरिक उत्सव को प्रदूषण-रहित तरीके से मनाने की दिशा में एक सकारात्मक पहल भी माना जा रहा है।

कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने कहा कि गोबर के उपलों से दहन करने पर वनों की कटाई कम होगी और होली का उत्सव सकारात्मक व हरित संदेश के साथ मनाया जा सकेगा। सभी को होली की शुभकामनाएँ दीं और कहा कि इस तरह की इको-फ्रेंडली पहल से परंपरा व पर्यावरण दोनों का सम्मान हो सकता है।

राम नगर की महिलाओं ने मनाया होलिका दहन का कार्यक्रम

स्मार्ट हलचल | शाहपुरा

वार्ड नम्बर 15 रामनगर की महिलाओ में बड़े ही धूमधाम के साथ होलिका दहन का कार्यक्रम मनाया।

महिला मण्डल की सदस्य संगीता सोनी ने बताया कि महिलाओं ने होली के कार्यक्रम में डीजे पर नाचते-गाते हुए।भगवान के भजनों पर आनन्द लेते हुए।बहुत ही हर्षोल्लास के साथ होली का कार्यक्रम मनाया।सबसे पहले सभी महिलाओं ने होलिका की पूजा-अर्चना कर विधि-विधान के साथ होलिका दहन का कार्यक्रम सम्पन्न किया।इसमें महिलाओं ने बताया कि होलिका का यह कार्यक्रम असत्य पर सत्य की जीत,अंधकार में प्रकाश का फैलना है। जिसमे संगीता सोनी, पूजा ठठेरा, हेमा ठठेरा आदि वार्ड की महिलाओं ने मिलकर होलिका दहन का कार्यक्रम सम्पन्न किया।

लाडपुरा में गोबर कण्डो से निर्मित वैदिक होली का किया दहन

स्मार्ट हलचल | लाडपुरा

कस्बे सहित गांवो में सोमवार शाम को होलिका दहन से पूर्व छोटी-छोटी बालिकाओं ने होली प्रांगण में जाकर गोबर से बने बड़बुलिए डाले और एक दूसरे को गुलाल लगाकर पर्व की शुभकामनाएं दी। क्षेत्र सहित कस्बे में होली का त्योहार हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। धाकड़ मोहल्ले में बालाजी मंदिर के पास सोमवार रात्रि 8.15 बजे शुभमुहूर्त में गोबर कंडो से बनी वैदिक होलिका दहन कार्यक्रम आयोजित हुआ। पंडित शिव शर्मा के वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विधिवत पूजन अर्चन कर वैदिक होलिका दहन किया गया।

रंगों व फूलों से होली खेल मनाया फागोत्सव, झूमी महिलाएं

स्मार्ट हलचल

सवाईपुर। कस्बे के निकटवर्ती ककरोलिया माफ़ी गांव में मंगलवार को चारभुजा मंदिर प्रांगण पर चारभुजा महिला मंडल की ओर से पारंपरिक उल्लास और सांस्कृतिक रंगों से सजा फागोत्सव मनाया गया । फागोत्सव में महिलाओं ने राज-स्थानी परंपरा के अनुरूप सजी-धजी वेशभूषा में फूलों व गुलाल की होली खेलकर फागोत्सव की शुरुआत की । महिलाओं ने फूलों की पंखुड़ियों से ठाकुर जी संग होली खेली । गुलाल व फूलों की होली ने वातावरण को सुगंध और सौहार्द से भर दिया । इस दौरान लोक संस्कृति की झलक देखने को मिली । महिलाओं ने सामूहिक रूप से चारभुजा नाथ मंदिर पर लोक गीतों और फाग के पारंपरिक गीतों का गायन किया, इसके साथ ही डीजे के मधुर धुनों पर महिलाएं खूब थिरकती नजर आईं । गीतों ने होली के रस और भक्ति भाव को और प्रगाढ़ कर दिया । इस दौरान राधा-कृष्ण की मनोहारी वेशभूषा धारण कर विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं । राधा-कृष्ण के स्वरूप में नृत्य प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

उनके नृत्य में भक्ति, प्रेम और आनंद का सुंदर समन्वय देखने को मिला, जिसे महिलाओं ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सराहा । इस दौरान शकुंतला देवी, गिरजा ओझा ,भगवती देवी, भगवती देवी शर्मा, सीता देवी सेन, धापू देवी ,राम जानकी पाठक, सीता देवी ओझा, लहरी बाई, सरला देवी ओझा (पूर्व सरपंच) गीता देवी जोशी, ओम लता वैष्णव, शोभना ओझा, रिंकू वैष्णव, रोशन तेली, सीमा ओझा, माया पाठक, मधु तेली, जया पाठक, संगीता ओझा, अनीता पाठक, तनुश्री जोशी, पदमा शर्मा, रेखा वैष्णव, चंदा ओझा आदि कई महिलाएं मौजूद रही।

प्रशासन की लापरवाही सैकड़ो गोवंश खा रहे हैं प्लास्टिक

गो भक्तों ने कचरा स्टैंड पर चारदीवारी बनाने की मांग की

स्मार्ट हलचल

पुर। उपनगर पुर में नगर निगम द्वारा लक्ष्मीपुरा रोड पर कचरा डालने हेतु डंपिंग यार्ड बना रखा है जो कि चारों तरफ से खुला होने के कारण पर के सैकड़ो गोवंश प्लास्टिक की थैलियां खाते हैं जिससे रोजाना दो-तीन गोवंश की मृत्यु हो रही है जिस पर पुर के गो भक्तों द्वारा गहरी चिंता व्यक्त की गई तथा प्रशासन के खिलाफ आक्रोश जताया गया। पुर के गोभक्त राजू आचार्य,अर्जुनआचार्य, सत्यनारायण गुर्जर सुनील आचार्य, प्रकाश आचार्य सहित उनकी टीम के सभी गौ भक्तों ने मौके पर पहुंचे कर वहां की स्थिति का जायजा लेकर वीडियो बनाकर क्षेत्रीय विधायक एवं नगर निगम के अधिकारियों से मांग की है कि जल्द ही इस डंपिंग यार्ड के चारों तरफ चार दिवारी बनाकर गोवंश को प्लास्टिक खाने से बचाया जावे अन्यथा गो भक्तों द्वारा एवं ग्राम वासियों द्वारा आंदोलन किया जाएगा जिसकी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

रामनिवास धाम में फूलडोल के पहले दिन भाईचारे की मिसालः फकीर शाह समुदाय को दी प्रसादी

स्मार्ट हलचल

शाहपुरा। शाहपुरा में रामस्नेही संप्रदाय की मुख्यपीठ रामनिवास धाम में मंगलवार को फूलडोल महोत्सव का शुभारंभ सामाजिक सौहार्द और भाईचारे की अनूठी मिसाल के साथ हुआ। पहले ही दिन सूरजपोल के पास संतों की पंगत स्थल पर फकीर शाह समुदाय के महिला-पुरुषों को संप्रदाय की ओर से विशेष सम्मान के साथ भोजन कराया गया और उनके परिजनों के लिए प्रसादी दी गई। खास बात यह रही कि जो प्रसादी संत स्वयं ग्रहण करते हैं, वही श्रद्धा-सम्मान के साथ फकीर समुदाय को भी परोसी गई। इसमें चावल व चवला अलग से, मिठाई और रामद्वारा में विशेष रूप से तैयार किए गए लड्डू शामिल रहे।

कार्यक्रम की अगुवाई रामस्नेही संप्रदाय के भंडारी संत शंभुराम महाराज एवं रामस्नेही संत तोताराम खाचरोद ने की। संतों के हाथों प्रसादी पाकर फकीर शाह समुदाय के लोग भावविभोर दिखे और इसे अपने जीवन का सौभाग्य बताया।

फकीर शाह समुदाय के प्रतिनिधि कय्युम शाह ने इस अवसर पर रामस्नेही संप्रदाय और संप्रदाय के पीठाधीश्वर के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनके लिए दुआ मांगी।

भंडारी संत शंभुराम महाराज ने कहा कि संप्रदाय में यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है और 'जियो और जीने दो' का सिद्धांत ही इसकी आत्मा है। संत तोताराम खाचरोद ने कहा कि सनातन संस्कृति की इससे बड़ी मिसाल क्या हो सकती है कि बिना निमंत्रण के फकीर समुदाय के लोग यहां आते हैं और उन्हें पूरे सम्मान के साथ संतों जैसी ही प्रसादी दी जाती है। महोत्सव के पहले दिन प्रतिवर्ष यह आयोजन होता है और आज के वैश्विक दौर में भी यह परंपरा जीवित है।

इस मौके पर सूर्यप्रकाश बिड़ला ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए जयकारे लगाए। कार्यक्रम में नारायण सिंह, राकेश सोमाणी, रामसहाय बिड़ला, सतीश काबरा, गोपाल सैनी, सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बीगोद में होलिका दहन परम्परागत तरीके से हुआ

स्मार्ट हलचल

आकोला। बीगोद स्थानीय बालिकाओं ने होली पर परम्परा से गोबर के बडुलिए की माला बनाकर होली के रोपित डड़े पर डाल कर नारियल फोड़ा तथा फुली,धानी ,चने का बच्चों में वितरण किया।नारियल फोड़े।

सायंकाल बालाजी चौक से 6 बज कर 35 मिनट पर कस्बे के मोतबिर नागरिक तथा युवा, बच्चे ढ़ोल के साथ होली दहन की परम्परा करने के लिए रवाना हुए जो गावाई होली के ठान पर पहुंचे। वहां होलिका दहन कार्यक्रम हर वर्ष की भांति परम्परागत तरीके से शुभमुहूर्त मे हुआ। स्थानीय प्राचीन काल से चली आ रही परम्परा के अनुसार मुख्य होली बस स्टैंड के पास गावाई होली का दहन स्थानीय प्रबुद्ध जनों द्वारा मंत्रोच्चार के साथ विधि-विधान से किया गया। कुछ लोगों ने होली गीत तथा गाली , हंसी,ठिठोली की परम्परा का निर्वाह किया गया।पंडित श्यामसुंदर भट्ट ने मंत्रोच्चार किया जिसके बाद गोविंद सिंह कानावत आदि मोतबिर नागरिकों ने होली को जलाने की रस्म की।

वहां से पुराने पुलिस थाने के पास रोपित होली के वहां गये।

अंग्रेजों के जमाने के पुराने थाने के निकट परम्परानुसार होली का दहन स्थानीय पुलिस थाने के थानाधिकारी जय सुल्तान ने विधि-विधान से सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में किया।उसके बाद दो स्थानों हस्तिनापुर में खटीक नवयुवक मंडल की होली तथा नंदराय रोड़ की बस्ती में होलिका दहन हुआ। सभी स्थानों पर उत्साह एवं उमंग से होली दहन सम्पन्न हुआ। सभी स्थानों पर नगर के बड़े बुजुर्गो मोतबिरो की उपस्थिति में होली दहन किया गया।सभी होली दहन स्थलों पर पुलिस प्रशासन की सतर्कता रही।किसी प्रकार की अप्रिय वारदात के समाचार नहीं है।सभी जगह शांतिपूर्ण माहौल में होली दहन हुआ।

स्वत्वाधिकार प्रकाशन एवं मुद्रक राजकुमार आमेटा के लिए स्मार्ट कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, कोर्ट के सामने, माण्डलगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित। मो. 9649222850 Email.smarthalchalnews@gmail.com

नाश्ते में रवा उपमा खाने से मिलेंगे ये लाभ

नाश्ते में अगर कुछ अच्छा (स्वादिष्ट और हेल्दी) खाने को मिल जाए तो पूरा दिन मूड अच्छा रहता है और आप अपनी प्रॉडक्टिविटी में भी अच्छा परिणाम देखते हैं। बस, जरूर इस बात की है कि हम सभी अपने काम और अपने शरीर की जरूरतों को समझें.लेकिन हममें से ज्यादातर लोग बस यहीं मात खा जाते हैं। आइए, जानते हैं दिन की बेहतर शुरुआत करने में रवा उपमा किस तरह हमारी सहायता कर सकता है.

रवा खाने के फायदे

- दक्षिणी भारत में सूजी को रवा कहा जाता है। उत्तर भारत और हिंदी भाषी राज्यों में सूजी का हलवा जिस तरह आय दिन घरों में बनता है और सभी बहुत चाव से खाते हैं। ठीक इसी तरह सूजी से तैयार उपमा यानी रवा उपमा दक्षिण भारत में बहुत अधिक लोकप्रिय भोजन है।
- रवा यानी सूजी गेहूं से तैयार होती है। यह फाइबर से भरपूर होती है इसलिए इसे पचाना हमारे पाचनतंत्र के लिए आसान होता है।
- फाइबर धीमी गति से डायजेस्ट होता है इसलिए यह लंबे समय तक हमारे शरीर को ऊर्जा देने का काम करता है।
- यानी रवा से बना उपमा खाने के बाद जल्दी से भूख नहीं लगती, नींद नहीं आती और आप लंबे समय स्वयं को तक ऊर्जावान महसूस करते हैं।
- रवा उपमा तैयार करते समय इसमें मौसमी सब्जियां मिलाई जाती हैं। यानी इसे खाने से आपको संपूर्ण पोषण प्राप्त होता है। सब्जियों से विटमिन्स और मिनरल्स साथ ही रवा से दिनभर के लिए ऊर्जा।
- रवा उपमा बनाने में मूंगफली और ड्राई फ्रूट्स का उपयोग किया जाता है। इन्हें खाने से आपको सभी जरूरी अमीनो एसिड्स, ओमेगा-3 फैटी एसिड, फॉलिक एसिड और विटमिन्स तथा मिनरल्स की प्राप्ति होती है।
- रवा उपमा फैट यानी वसा और हानिकारक कॉलेस्ट्रोल से पूरी तरह फ्री होता है। इसलिए यह आपके हार्ट की सेहत के लिए भी एक शानदार नाश्ता है। जो हृदय की पंपिंग को सही बनाए रखने और अपने पौषक तत्वों से रक्त का प्रवाह बनाए रखने का काम करता है।
- रवा उपमा खाने में बहुत अधिक स्वादिष्ट और साथ ही सेहत के गुणों से भरपूर होता है। इसलिए साउथ इंडिया से निकलकर इस फूड ने देश के हर हिस्से और घर में अपनी जगह बना ली है।
- आज के समय में पोहा (मुख्य रूप से मध्य भारतीय आहार) दही चूड़ा (मुख्य रूप से बिहार का भोजन) और रवा उपमा तथा इडली (दक्षिण भारतीय भोजन) अपने-अपने राज्यों की सीमाए पार कर नैशनल फूड बन चुके हैं।
- इसकी खास वजह है कि इन फूड्स को तैयार करने में कम समय लगता है। ये पौषक तत्वों से भरपूर होते हैं और कम ऑइली होने के कारण फिटनेस को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। इसके साथ ही पाचन के लिहाज से बहुत अच्छे होते हैं तो इन्हें खाने के बाद आलस भी नहीं आता है।

शरीर में पानी की कमी को हल्के में ना लें

शरीर में पानी की कमी को हल्के में ना लें। ये आपको कई गंभीर बीमारियों की तरफ धकेल सकती है. चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, हमारे शरीर का 30 प्रतिशत हिस्सा तरल है और बाकी 70 प्रतिशत में अस्थि और मज्जा शामिल है। यही वजह है कि जल को जीवन की संज्ञा दी गई है। क्योंकि मनुष्य बिना भोजन के कुछ समय रह सकता है लेकिन बिना पानी के रहना असंभव होता है। यानी जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। पानी तो हम सभी लोग पीते हैं लेकिन ज्यादातर लोग शरीर की जरूरत के अनुसार उचित मात्रा में पानी नहीं पीते हैं। यही कारण है कि हमारे समाज में बड़े स्तर पर सूखे की बीमारी से पीड़ित पेशंट देखे जा सकते हैं। खासतौर पर गर्मी के मौसम में डिहाइड्रेशन के मरीजों की मानो बाढ़ आ जाती है।

हल्के में ना लें यह समस्या

- आमतौर पर शरीर में पानी की कमी होने को हम सभी बहुत हल्के में लेते हैं। यह एक बड़ी वजह है कि डिहाइड्रेशन के कारण बड़ी संख्या में रोगियों की मृत्यु हो जाती है। आइए, यहां जानते हैं शरीर के उन सामान्य लक्षणों के बारे में जो आपके शरीर में पानी की कमी को दर्शाते हैं। ताकि इन लक्षणों के आधार पर आप तुरंत इस समस्या से निजात पा सकें.

पानी की कमी के सामान्य लक्षण

- जब शरीर में पानी की कमी होती है तो आपके होंठ बहुत सूखे-सूखे हो जाते हैं और उनकी बाहरी त्वचा फटने लगती है। कई बार होठों से खून भी आने लगता है।
- पानी की कमी के कारण गला लगातार सूखा बना रहता है और बार-बार प्यास लगने पर पानी पीने के बाद भी प्यास नहीं मिटती है।
- शरीर में पानी की कमी के कारण सीने पर हल्की जलन, पेट में एसिडिटी या असहजता हो सकती है। साथ ही मुंह से सांसों के साथ लगातार दुर्गंध आती है। ब्रश करने के बाद भी आप सांसों की दुर्गंध फील कर पाते हैं।

यूरिन, स्किन और मसल्स पर असर

- जब शरीर में पानी की कमी होती है तो पेशाब गाढ़े पीले रंग का आता है। इसके साथ मात्रा में सामान्य से कम होता है और पेशाब के बाद प्राइवेट पार्ट में जलन या खुजली की समस्या हो सकती है।
- डिहाइड्रेशन से जूझ रहे लोगों के शरीर की त्वचा भी बहुत रूखी और बेजान नजर आती है। जो लोग लंबे समय से पानी की कमी से जूझ रहे होते हैं, उनकी त्वचा पर कम उम्र में ही झुर्रियां नजर आने लगती हैं।
- पानी की कमी से मांसपेशियों में दर्द, ऐंठन और जकड़न की समस्या हो सकती है। इसके साथ ही सिर में लगातार दर्द बना रहता है। इस कारण रोगी का चेहरा मुर्झाया हुआ और तेजहीन लगता है।
- जो लोग शरीर की जरूरत के अनुसार पानी नहीं पीते हैं, उनकी आंखों के नीचे काले घेरे साफ देखे जा सकते हैं। इन लोगों की आंखें अंदर धसने लगती हैं और इन्हें हर समय कमजोरी का अहसास बना रह सकता है।

सेहत समस्याओं से निजात पाने के लिए पुदीने के घरेलू नुस्खे

गर्मियों का मौसम आते ही भूख कम लगने लगती है, पेट व त्वचा की गर्मी बढ़ जाती है। ऐसे मौसम में ऐसी चीजें खाने की जरूरत होती है जो आपको ठंडक दे और पुदीना इस मौसम के लिए एक बेहतरीन विकल्प है। गर्मियों में पुदीना या मिंट के अलग-अलग इस्तेमाल से कई सेहत लाभ पाए जा सकते हैं। आइए, जानते हैं पुदीना के ये 8 बेहतरीन घरेलू नुस्खे

- पेट की गर्मी को कम करने के लिए पुदीने का प्रयोग बेहद फायदेमंद है। इसके अलावा यह पेट से संबंधित अन्य समस्याओं से भी जल्द निजात दिलाने में लाभकारी है। इसका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है।
- दिनभर बाहर रहने वाले लोगों को पैर के तलवों में जलन की शिकायत रहती है, ऐसे में उन्हें फ्रिज में रखे हुए पुदीने को पीसकर तलवों पर लगाना चाहिए ताकि तुरंत राहत मिल सके। इससे पैरों की गर्मी भी कम होगी।
- सूखा या गीला पुदीना छाछ, दही, कच्चे आम के पने के साथ मिलाकर पीने पर पेट में होने वाली जलन दूर होगी और ठंडक मिलेगी। गर्मी हवाओं और लू से भी बचाव होगा।
- अगर आपको अक्सर टॉन्सिल्स की शिकायत रहती है और इसमें होने वाली सूजन से भी आप परेशान हैं तो पुदीने के रस में सादा पानी मिलाकर इस पानी से गरारे करना आपके लिए फायदेमंद होगा।
- गर्मी में पुदीने की चटनी का रोजाना सेवन सेहत से जुड़े कई फायदे देता है। पुदीना, काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, मुनक्का, जीरा, छुहारा सबको मिलाकर चटनी पीस लें। यह चटनी पेट के कई रोगों से बचाव करती है व खाने में भी स्वादिष्ट होती है। भूख न लगने या खाने से अरुचि होने पर भी यह चटनी भूख को खोलती है।
- पुदीने व अदरक का रस थोड़े से शहद में मिलाकर चाटने से खांसी ठीक हो जाती है। वहीं अगर आप लगातार हिचकी आने से परेशान हैं तो पुदीने में चीनी मिलाकर धीरे-धीरे चबाएं। कुछ ही देर में आप हिचकी से निजात पा लेंगे।
- पुदीने की पत्तियों का लेप करने से कई प्रकार के चर्म रोगों को खत्म किया जा सकता है। घाव भरने के लिए भी यह उत्तम है। इसके अलावा गर्मी में इसका लेप चेहरे पर लगाने से त्वचा की गर्मी समाप्त होगी और आप ताजगी का अनुभव करेंगे।
- पुदीने का नियमित रूप से सेवन आपको पीलिया जैसे रोगों से बचाने में सक्षम है। वहीं मूत्र संबंधी रोगों के लिए भी पुदीने का प्रयोग बेहद लाभदायक है। पुदीने के पत्तियों को पीसकर पानी और नींबू के रस के साथ पीने से शरीर की आंतरिक सफाई होगी।

हल्की-हल्की भूख में लें इन तीन सूप का मजा

नाश्ते के बाद और लंच से पहले वाली भूख को हैंडल करने के लिए ज्यादातर लोग चाय, कॉफी या फास्ट फूड और डिब्बाबंद फूड्स का सेवन करते हैं। लेकिन हम यहां आपको चंद मिनट में तैयार होनेवाले उन 3 खास सूप के बारे में बताने जा रहे हैं, जो आपको 'अपनी तो लाइफ सेट है!' जैसा फील देंगे.

वेजिटेबल सूप

- मौसमी सब्जियों के साथ आप मिक्स वेज सूप तैयार कर सकते हैं। इसके लिए आप किसी एक सब्जी को उबालकर उसका सूप बनाएं और शिमला मिर्च, बीन्स, मशरूम, हरी प्याज और आलू को महीन टुकड़ों में काटकर इन्हें अलग उबाल लें।
- पहले से तैयार सूप में इन सब्जियों को मिलाएं और अपने स्वाद के हिसाब से काला नमक, जीरा पाउडर आदि मिलाएं। ध्यान रखें सूप को गाढ़ा करने के लिए कॉर्नफ्लोर मिलाया जाता है। आप इसका उपयोग कर सकते हैं लेकिन अधिक मात्रा में इसे मिलाने से बचें। नहीं तो यह आपके वजन को बढ़ाने की वजह बन सकता है।

चुकंदर का सूप

- चुकंदर का सूप बनाने के लिए आप टमाटर, आलू, प्याज, लहसुन, काली मिर्च का पाउडर और नींबू का रस जैसी चीजों का उपयोग करते हैं। ये सभी बहुत पौष्टिक और सेहत को फिट रखनेवाली चीजें हैं।
- चुकंदर का सूप तैयार करने के लिए एक कुकर में बारीक कटे प्याज और लहसुन भून लें। इसके बाद कटे हुए चुकंदर, आलू और टमाटर डालकर भूनें। इन्हें दो मिनट पकाने के बाद कुकर को बंद कर दें और इसमें धीमी आंच पर 4 सीटी आने दें।
- तैयार मिश्रण को मिक्सी में डालकर पीसें और गाढ़ा लिक्विड तैयार करें। इसे छान लें और काली मिर्च पाउडर तथा नींबू का रस मिलाकर सूप तैयार करें और इसे हरी धनिया पत्तियों के साथ गार्निश करके सूप का लुत्फ उठाएं।

मूंग दाल का शोरबा

- मूंग दाल का शोरबा मात्र 10 मिनट में तैयार हो जाता है। इसके लिए आप बिना छिलके की मूंग दाल को धुलकर कुकर में 3 से 4 सीटी लगा लें। इसे तैयार करते समय आपको पानी की मात्रा सामान्य दाल बनाने से दोगुना रखें और गैस की धीमी आंच पर रखकर ही पकाएं।
- अब इसमें हरी धनिया पत्ती, बारीक कटी हरी मिर्च, बारीक कटा कच्चा प्याज मिलाकर तड़का लगा दें। मसलों के नाम पर इसमें सिर्फ हल्दी पाउडर का उपयोग करें, हल्का काला नमक मिलाएं और काली मिर्च पाउडर मिक्स करके गर्मागर्म शोरबा का लुत्फ उठाएं।

वजन घटाने के लिए लोग न जानें कितनी प्रकार की डायट फॉलो करते हैं। लेकिन अपने आपको भूखा रखकर लंबे समय तक बिना सोचे-समझे किसी भी प्रकार की डायट का पालन करना मुश्किल हो जाता है। वजन घटाना कोई आसान काम नहीं है। शरीर की एक्सट्रा चर्बी को निकालने के लिए नियमित व्यायाम के साथ कैलोरीज भी बर्न करनी पड़ती हैं। इसके लिए आयुर्वेद के पास ऐसे कई तरीके हैं, जिससे शरीर की गंदगी बाहर निकलेगी और आपको वजन कम करने में आसानी होगी। ये तरीके बेहद आसान हैं, लेकिन आपको इन्हें अपनी लाइफस्टाइल का हिस्सा बनाना होगा। आइए जानते हैं क्या हैं वो तरीके जिसे मोटापा घटाने के लिए आयुर्वेद में अहम माना गया है.

खाली पेट इन चीजों का सेवन करने से घटता है मोटापा

गर्म पानी के साथ घी और नींबू

200 मिलीलीटर पानी के साथ थोड़ा सा नींबू या घी का सेवन करने से पेरिस्टलसिस में सुधार होता है, जो कि वेस्ट और खाने की गति को नीचे की ओर ढकेलता है। यदि आपका शरीर वात या पित्त प्रकार का है, तो आप इससे आपका पाचन तंत्र चिकना होगा जिससे कब्ज की समस्या दूर होगी।

डायजेस्टिव चाय

आजकल, बाजार में आयुर्वेदिक चाय की ढेर सारी वैराइटीज उपलब्ध हैं। लेकिन अच्छा होगा कि आप घर पर अपनी चाय खुद ही बना लें। इसके लिए 1 चम्मच जीरा, 1 चम्मच सौंफ, 1 चम्मच धनिया के बीज, 1 इलायची और थोड़ी सी अजवाइन को लेकर 500 मिलीलीटर पानी में तब तक उबालें, जब तक पानी की मात्रा आधी न हो जाए।

मेटाबोलिज्म बढ़ाने के लिए चाय आजमाएं

अपने मेटाबोलिज्म को तेज बनाने के लिए आप दालचीनी, इलायची, लौंग, कद्दूकस की हुई अदरक, काली मिर्च, हल्दी और स्टार ऐनीज को 500 मिली पानी में उबालें। यह पानी आधा हो जाए तब इसमें आधा नींबू और कोकोनट शुगर मिलाएं। चाय शरीर की गर्मी बढ़ाकर चयापचय में सुधार करके वजन कम करने में मदद करेगी।

कच्चे फल

सुबह खाली पेट हर्बल चाय पीने के बाद, कच्चे फलों का सेवन करें जो प्रकृति में थोड़े से कसैले हो सकते हैं। ग्रीन और रेड एपल, क्रैनबेरी, ब्लूबेरी, चेरी, स्ट्रॉबेरी, ब्लैकबेरी, अनानास, आंवला और अनार जैसे फलों को ही चुनें। यह फल शरीर में वॉटर रिटेंशन को कम करते हैं और आपकी त्वचा में कोलेजन को बढ़ाते हैं, जिससे वजन कम करने में मदद मिलती है।

सिलेरी जूस (अजमोद का रस)

तनाव से बचने के लिए आयुर्वेद कच्चे फल और पकी या उबली हुई सब्जियां खाने की सलाह देता है। ऐसी स्मूदी लेने से बचें जिसमें फल, सब्जियां, दूध और दही का मिश्रण शामिल हो। यह शरीर में विषाक्त पदार्थों के संचय का कारण बन सकता है। बल्कि पेट की ब्लोटिंग और अतिरिक्त चर्बी को कम करने के लिए एक चुटकी सेंधा नमक और नारियल तेल के साथ सिलेरी का जूस लें।

वजन घटाने के पांच बुनियादी नियम भी जानें

- जब आपको भूख लगे तब ही खाएं।
- सूर्यास्त के बाद न खाएं।
- इंटरमिटेंट फास्टिंग करें जिसमें 16 घंटे के तक कुछ भी न खाएं। इससे आपकी ऊर्जा तो बढ़ती है साथ में दिमाग पर कंट्रोल रहता है।
- कच्चे फल खाने के बाद पका हुआ भोजन करें।
- आपका पेट केवल आपकी मुट्ठी के आकार का है। अपनी भूख से 80 प्रतिशत भोजन कम खाएं, ताकि खाना पचाने वाले रस अपना काम आसानी से कर सकें।

स्वत्वाधिकार प्रकाशन एवं मुद्रक राजकुमार आमेटा के लिए स्मार्ट कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, कोर्ट के सामने, माण्डलगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित। मो. 9649222850 Email.smarthalchalnews@gmail.com

टैबलेट या सरकारी खिलौने? तकनीकी शिक्षा का बड़ा धोखा

शिक्षा को सेवा की तरह देखा जाए, सौदे की तरह नहीं

डॉ. सत्यवान सौरभ

स्मार्ट हलचल

हरियाणा सरकार ने कोविड काल में 700 करोड़ रुपये खर्च कर 5 लाख छात्रों को टैबलेट बांटे थे, जिनका उद्देश्य डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देना था। परंतु तीन साल बाद इन टैबलेट्स में न तो सिम कार्ड हैं, न इंटरनेट की सुविधा, और न ही इनसे पढ़ाई हो रही है। इनमें 2025-26 तक का सिलेबस तो अपलोड है, लेकिन उपयोग शून्य। यह लेख सरकारी तंत्र की लापरवाही, नीति निर्माण की खामियों और बच्चों के भविष्य के साथ हुए छल पर सवाल उठाता है। तकनीक का दिखावा शिक्षा के अधिकार की हत्या बन चुका है।

कोविड-19 ने भारत समेत पूरी दुनिया को शिक्षा के डिजिटल स्वरूप की अहमियत से रूबरू कराया। जब स्कूल बंद थे, तब ऑनलाइन क्लास ही बच्चों की एकमात्र शैक्षणिक जीवन रेखा बनी। ऐसे में हरियाणा सरकार द्वारा 700 करोड़ की लागत से 5 लाख छात्रों को टैबलेट बाँटना एक प्रशंसनीय निर्णय प्रतीत हुआ। योजना थी कि छात्र आधुनिक तकनीक से जुड़ेंगे, डिजिटल ज्ञान की दुनिया में कदम रखेंगे और सरकारी शिक्षा का स्तर ऊँचा उठेगा। लेकिन जैसे-जैसे वक्त बीता, यह योजना एक झूठे वादे, दिखावटी प्रयास और भारी भरकम बजट की बर्बादी में बदलती गई।

एक रिपोर्ट ने इस योजना की सच्चाई उजागर की। रिपोर्ट के अनुसार, टैबलेट वितरण के तीन साल बाद भी छात्रों ने इनका सही उपयोग नहीं किया। ये टैबलेट आज बिना सिम, बिना इंटरनेट सुविधा और बिना कोई तकनीकी सहायता के बंद पड़े हैं। इनमें तीन साल का सिलेबस जरूर अपलोड है, पर पढ़ाई नहीं हुई। शिक्षा मंत्री तक को अब इस स्थिति की जानकारी मिली है और वे मुख्यमंत्री से मिलने की तैयारी में हैं। यह कोई साधारण चूक नहीं है। यह शिक्षा के नाम पर किया गया राजनीतिक ढकोसला है। ऐसी योजनाएं न केवल छात्रों का समय और भविष्य बर्बाद करती हैं, बल्कि समाज के सबसे कमजोर तबके — गरीब, दलित, ग्रामीण बच्चों — के साथ अन्याय भी करती हैं, जो केवल सरकारी स्कूलों में ही पढ़ पाते हैं।

प्रश्न यह है कि इतनी बड़ी योजना की बुनियादी विफलता का जिम्मेदार कौन है?

सरकार ने बिना ज़मीनी तैयारी किए यह योजना लागू की। टैबलेट तो बांट दिए गए, लेकिन इनमें सिम कार्ड या नेटवर्क नहीं था। स्कूलों में वाई-फाई की व्यवस्था नहीं थी। शिक्षकों को प्रशिक्षण नहीं दिया गया कि इन टैबलेट्स से पढ़ाना कैसे है। तकनीकी सहायता के लिए कोई हेल्पलाइन या सपोर्ट स्टाफ नहीं था। बच्चों के घरों में बिजली और चार्जिंग की सुविधा भी सुनिश्चित नहीं की गई। इन बुनियादी सवालों को दरकिनार कर केवल टैब बांटना ही योजना मान लिया गया। यह सोच ही असफलता का बीज थी। टैबलेट बाँटना ही शिक्षा नहीं है — बल्कि उन्हें उपयोगी बनाना, बच्चों को प्रशिक्षित करना, और शिक्षकों को इसके प्रति संवेदनशील बनाना — असल काम था।

इस विफलता का बड़ा कारण हमारी नौकरशाही और राजनीतिक संस्कृति है, जहाँ योजनाएं सिर्फ 'दिखावे' के लिए बनाई जाती हैं। फोटो खिंचवाना, प्रेस विज्ञप्ति जारी करना और सोशल मीडिया पर तालियाँ बटोरना असली उद्देश्य बन जाता है। योजना ज़मीन पर कैसे उतर रही है, इसकी कोई जवाबदेही नहीं होती।

इसका सीधा असर बच्चों पर पड़ा है। सोचिए एक ग्रामीण बच्चे को टैबलेट तो मिला, लेकिन उसमें इंटरनेट नहीं, शिक्षक नहीं, मार्गदर्शन नहीं — ऐसे में वह टैबलेट उसके लिए सिर्फ एक इलेक्ट्रॉनिक खिलौना बनकर रह गया।

योजना का दूसरा पहलू यह है कि शिक्षा विभाग ने इन टैबलेट्स में पहले से ही तीन साल का सिलेबस अपलोड कर दिया था। यानी मान लिया गया कि बच्चों को बस टैब मिल जाए, पढ़ाई अपने आप हो जाएगी। यह सोच बताती है कि शिक्षा विभाग बच्चों को 'उपभोक्ता' की तरह देख रहा है, 'विद्यार्थी' की तरह नहीं।

अब सवाल यह उठता है — क्या टैबलेट में पाठ्यक्रम अपलोड कर देना ही शिक्षा है? क्या शिक्षक की भूमिका इतनी नगण्य हो गई है कि वह केवल एक फॉर्मेलिटी भर है? क्या डिजिटल शिक्षा का अर्थ केवल डिवाइस बाँटना भर है?

शिक्षा एक संवाद है — एक दोतरफा प्रक्रिया। इसमें तकनीक एक माध्यम हो सकता है, साध्य नहीं। जब तक शिक्षक, छात्र और सामग्री तीनों एक साथ न जुड़ें — तब तक शिक्षा अधूरी है। टैबलेट अकेले इस त्रिकोण को पूरा नहीं कर सकते।

इस पूरे घटनाक्रम में एक और हैरान कर देने वाली बात यह है कि योजना के तीन साल बाद तक भी कोई ऑडिट नहीं हुआ। किसी अधिकारी ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि टैबलेट इस्तेमाल हो रहे हैं या नहीं। यह दर्शाता है कि शिक्षा विभाग में योजना का मूल्यांकन और निगरानी तंत्र कितना कमजोर है।

सच्चाई यह है कि इस तरह की योजनाओं में भ्रष्टाचार, कमीशनखोरी और राजनीतिक प्रचार का एक घिनौना खेल चलता है। टैबलेट की खरीद से लेकर वितरण तक कई स्तरों पर घालमेल संभव है — और यही कारण है कि शिक्षा विभाग इस विफलता पर चुप्पी साधे बैठा है।

क्या इसका समाधान नहीं है? बिल्कुल है।

सरकार को तुरंत टैबलेट्स की स्थिति का सर्वेक्षण करवाना चाहिए। हर स्कूल में वाई-फाई सुविधा अनिवार्य रूप से स्थापित होनी चाहिए। शिक्षकों को डिजिटल शिक्षा का प्रशिक्षण दिया जाए। हर स्कूल में एक तकनीकी सहायक नियुक्त किया जाए। हर महीने टैबलेट उपयोग का डेटा सार्वजनिक किया जाए। भविष्य में कोई भी डिजिटल योजना लागू करने से पहले पायलट प्रोजेक्ट ज़रूरी हो। और सबसे ज़रूरी बात — शिक्षा के क्षेत्र में नीति बनाते समय ज़मीन से जुड़े शिक्षकों और छात्रों की राय को शामिल किया जाए। केवल सचिवालय में बैठकर योजनाएं बनाना अब शिक्षा के भविष्य के साथ खिलवाड़ है।

हमें यह समझना होगा कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाला बच्चा भी एक सपना लेकर आता है — वह डॉक्टर बनना चाहता है, वैज्ञानिक, टीचर या लेखक बनना चाहता है। लेकिन जब उसे ऐसे 'बंद टैबलेट' थमाए जाते हैं, तो यह उसके सपनों के साथ धोखा होता है। **टैबलेट योजना एक चेतावनी है** — कि यदि सरकारें शिक्षा को प्रचार माध्यम समझती रहीं, तो लाखों बच्चों का भविष्य अंधेरे में चला जाएगा। शिक्षा का डिजिटलीकरण आवश्यक है, लेकिन वह केवल उपकरणों से नहीं, बल्कि नीति, प्रशिक्षण और निगरानी से संभव है।

इसलिए समय आ गया है कि हम तकनीक के पीछे भागना छोड़, उसके बेहतर इस्तेमाल की समझ विकसित करें। टैबलेट के नाम पर 700 करोड़ जलाने से बेहतर होता कि उस पैसे से हज़ारों स्कूलों में लाइब्रेरी, लैब और प्रशिक्षित शिक्षक नियुक्त किए जाते।

आज ज़रूरत है — शिक्षा को सेवा की तरह देखा जाए, सौदे की तरह नहीं। और छात्रों को ग्राहक नहीं, भविष्य का निर्माता समझा जाए।

स्मार्ट मीटर बन सकता है सरकार का सिरदर्द

पवन वर्मा

▪ स्मार्ट हलचल

गुलाबगंज में विधवा महिला और पांच बच्चे, एक कमरे का कच्चा कबेलू और पत्नी का घर। सरकार के राशन पर निर्भर परिवार। बिजली बिल पहले सौ-डेढ़ सौ रुपए आता था। स्मार्ट मीटर लगने के बाद सात हजार तीन सौ का बिल आया। सरकार विद्युत मंडल में सुधार करो...। यह लिखा है विदिशा भाजपा के वरिष्ठ नेता मनोज कटारे ने अपनी फेसबुक वॉल पर।

विदिशा कांग्रेस के प्रवक्ता अरुण अवस्थी राजू कहते हैं कि यह सरकार की खुली लूट है। स्मार्ट मीटर ने लोगों की आर्थिक स्थिति पर बड़ा प्रहार किया है। लोग बिजली के बड़े हुए बिल भरे या अपने यहां दो वक्त की रोटी की व्यवस्था करें। बहुत कठिन स्थिति में भाजपा सरकार की स्मार्ट मीटर लगाने की योजना गरीबों को ले आई है, जिनके यहां पर सौ-दो सौ रुपए के बिल आ रहे थे, अब उनके यहां पर पांच-दस हजार रुपए के बिल भेजे जा रहे। शिकायतों पर कोई सुनवाई नहीं हैं।

विदिशा वह जिला है, जिसका प्रतिनिधित्व लोकसभा में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान करते हैं। स्मार्ट मीटर लगने के बाद बिजली बिल की यह परेशानी सिर्फ विदिशा अकेले शहर की नहीं है, बल्कि प्रदेश में जहां-जहां बिजली के स्मार्ट मीटर लगे हैं वहां पर यह समस्या है। बिजली के बड़े हुए बिल आ रहे हैं। हर दिन कहीं न कहीं इसके विरोध में धरने-प्रदर्शन किए जा रहे हैं।

मध्य प्रदेश में विदिशा अकेला ऐसा शहर नहीं हैं, जहां स्मार्ट मीटर को लेकर विरोध हो रहा है, बल्कि राजधानी भोपाल में भी इसका लगातार विरोध हो रहा है। हालात यह हो गए हैं कि इन मीटरों को अब लोग अपने घर पर लगाने नहीं दे रहे हैं। वहीं सिवनी में स्मार्ट मीटर के विरोध को लेकर बंद हो चुका है। प्रदेश में जहां-जहां स्मार्ट मीटर लगाए गए हैं, वहां विरोध हो रहा है। इसमें इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, सागर, सतना, रीवा जैसे मध्य प्रदेश के बड़े शहर शामिल हैं तो विदिशा, सीहोर, बुरहानपुर जैसे छोटे शहरों में भी इसका विरोध तेजी से हो रहा है। भोपाल में कांग्रेस का दावा है कि 508 उपभोक्ताओं को 1.5 करोड़ रुपए के बिल थमाए जा चुके हैं। इसे लेकर कांग्रेस ने धरना भी दिया था।

स्मार्ट मीटर का विरोध क्यों?

पहले के मीटर में बिजली की जो खपत आती थी, उसके मुकाबले स्मार्ट मीटर दोगुना और तीन गुना खपत बता रहे हैं। बिजली घर के दफ्तरों में हर जगह इन मीटर को लेकर शिकायतों का अंबार लग गया है, अफसर भी इन शिकायतों पर

ज्यादा काम नहीं कर रहे, नतीजे में चाहे ऑन लाइन शिकायतें हों या ऑफ लाइन शिकायत, या टोल फ्री नंबर 1912 किसी का कोई निराकरण ही नहीं किया जा रहा है। यानि मध्य प्रदेश का बिजली विभाग एक तरफा चल रहा है। शिकायतों का निपटारा होने तक उपभोक्ता बिल भरने से गुरेज करते हैं, इसी बीच बिना पूर्व सूचना या चेतावनी के बिजली काट दी जाती है। मजबूरी में शिकायत का निपटारा हो या न हो उपभोक्ता को बिजली का बिल भरना ही पड़ता है।

मध्य प्रदेश में गैर राजनीतिक तरीके से विरोध अमूमन नहीं होते हैं, लेकिन बिजली के इन मीटरों के प्रदेश के अधिकांश शहरों में ऐसे विरोध शुरू हो गए हैं, जो बिना किसी राजनीतिक दल के झंडे के हो रहे हैं। इसके चलते भाजपा और कांग्रेस दोनों के नेता ही उपभोक्ताओं के साथ दिखाई दे रहे हैं।

मध्य प्रदेश विधानसभा के मानसून सत्र में स्मार्ट मीटर को लेकर उज्जैन जिले के कांग्रेस विधायक महेश परमार ने सदन में नियम 142 क के तहत 'किसानों पर विद्युत प्रकरण बनाकर पेनाल्टी लगाने' पर हुई चर्चा में कहा कि जहाँ जहाँ स्मार्ट मीटर लग रहे हैं वहां वहां प्रदर्शन हो रहे है। हेल्पलाइन नम्बर लगता नहीं और सरकार ने ऑनलाइन शिकायत की व्यवस्था की नहीं।

कुछ शहरों में कांग्रेस इसके विरोध में उतरी है। फिलहाल सरकार का ध्यान इस ओर नहीं हैं, नतीजे में बिजली विभाग लगातार स्मार्ट मीटर लगाने के काम में जुटा हुआ है। दरअसल देश भर में 25 करोड़ पुराने मीटर बदलकर उनकी जगह स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे हैं, सरकार का दावा है कि स्मार्ट मीटर लगाए जाने से 2031-32 तक करीब 11 लाख करोड़ रुपए के राजस्व घाटे की बचत होगी। देश में अब तक साढ़े ग्यारह करोड़ स्मार्ट मीटर लगाए जा चुके हैं।

कांग्रेस नहीं बना सकी मुद्दा

नए मीटरों की कथित तेजी के साथ राज्य की राजनीति गरमाने की संभावना थी, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। मध्य प्रदेश में कांग्रेस इसे राज्य स्तरीय मुद्दा बनाने में अब तक सफल नहीं हो सकी है, उसके बड़े नेता इस मामले में सिर्फ बयान देने तक तक सिमट कर रहे गए हैं। जबकि प्रदेश में जनता जिस तरह से इसका विरोध कर रही है, उसे देखकर यह लगता है कि यह मुद्दा मध्य प्रदेश में कांग्रेस को जनता के बीच मजबूती दे सकता है, लेकिन कांग्रेस के नेता इसे अब तक नहीं समझ सके हैं। कुल मिलाकर जिस तरह से प्रदेश के लगभग हर शहर में जनता का विरोध स्मार्ट मीटर को लेकर हो रहा है,यह भविष्य में सरकार के लिए सिरदर्द साबित हो सकता है।

प्रलोभन का परिणामः जब प्रकृति निगलने लगती हैं

डॉ. प्रियंका सौरभ

स्मार्ट हलचल

भारत में नदियों, पहाड़ों और जल स्रोतों के साथ हो रहा खिलवाड़ अब आपदाओं का कारण बन रहा है। लालचवश लोग नदियों के पाट में मकान और पहाड़ों पर रिसॉर्ट बना रहे हैं। एक टपकता नल प्रतीक है उस सोच का, जो पर्यावरण की उपेक्षा करती है। सेल्फी, पर्यटन और मुनाफ़े की इस भीड़ में प्रकृति दम तोड़ रही है। हमें चेतना की जरूरत है—विकास से पहले संवेदना। यदि अब भी नहीं रुके, तो अगली आपदा किसी की संवेदना नहीं देखेगी, बस सबकुछ बहा ले जाएगी। प्रकृति माफ़ नहीं करती, वह वापस लेती है।

यह अजीब विडंबना है कि जब कोई प्राकृतिक आपदा आती है, तो हम सिर्फ़ मरने वालों पर शोक प्रकट करते हैं — जबकि जिनके लालच, उपेक्षा और मूर्खता से वह आपदा आई, उन पर सवाल उठाने का साहस नहीं करते। एक नदी के बहाव में बहे मकानों और दुकानों को देखकर हम आंसू तो बहाते हैं, लेकिन क्या हम उस कुकर्म पर विचार करते हैं जिसने नदी की गोद में घर बनवा दिए?

आज भारत के पहाड़ों से लेकर मैदानों तक, हर जगह मनुष्य का प्रलोभन ही विनाश का बीज बन चुका है। हाल की घटनाएं — उत्तरकाशी, जोशीमठ, केदारनाथ, किन्नौर या हिमाचल की तबाही — सभी हमें याद दिलाती हैं कि जब मनुष्य अपने हित में प्रकृति की रेखाएं मिटा देता है, तो नदी, पहाड़, बादल और धरती एक दिन सबकुछ वापस ले लेते हैं।

मेरे घर के पास एक छोटा सा रेस्तरां है। उसके नल से दिन-रात पानी टपकता रहता है। मैंने कई बार कहा, लेकिन उन्हें फर्क नहीं पड़ा। एक ढीला वॉशर बदलने से समस्या हल हो सकती है, लेकिन सौ-पचास रुपये की मरम्मत उनके लिए बेमतलब है। पानी बहता है, तो बहता रहे। क्या यह एक रेस्तरां तक सीमित लापरवाही है? बिल्कुल नहीं। यह प्रतीक है उस मानसिकता का जो कहती है — 'जो हो रहा है, होने दो। हमें क्या फर्क पड़ता है?' इस सोच के कारण हर दिन लाखों लीटर पानी व्यर्थ जाता है, गाड़ियों से निकलती धुआं-संस्कृति जारी रहती है, कचरे में दम तोड़ती गायें खड़ी रहती हैं, और हिमालय की छाती पर रिसॉर्ट्स उगते रहते हैं।

भारत का हिमालय क्षेत्र न सिर्फ़ भौगोलिक, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी हमारी धरोहर है। परंतु अब वह पर्यटन का बाजार बन चुका है। पहाड़ों की आत्मा शांति थी, अब वह शोर में डूब चुकी है। दो दिन की छुट्टी मिलते ही लाखों लोग सेल्फी, शराब और शोरगुल की भूख लिए हिमालय पर टूट पड़ते हैं। वे वहां शांति खोजने नहीं जाते, बल्कि वहां भी उसी बाजार को बसाना चाहते हैं जिससे भागने का दावा करते हैं।

रिसॉर्ट, होटल, रेस्टोरेंट, पार्किंग, रोड— हर जगह अतिक्रमण है। पहाड़ की सीमित सहनशक्ति की कोई चिंता नहीं। जिस जमीन को सदियों से पेडों ने थामा हुआ था, वहां अब कंक्रीट की मोटी परतें बिछ गई हैं। जब बरसात आती है, तो वह जमीन अपने भीतर पानी को नहीं समेट पाती — परिणामस्वरूप, वही जल वेग बनकर जान लेता है।

बादल फटते हैं, बाढ़ आती है, और हम सोशल मीडिया पर दुख प्रकट करके आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन क्या हम पूछते हैं कि उस बाढ़ ने रास्ता क्यों बदला? क्या वह

प्राकृतिक था या उसे रोका गया था? नदियाँ सदियों से बहती आई हैं, उन्होंने अपने लिए रास्ता बनाया है। लेकिन जब हम घाटी में मकान बना लेते हैं, नदी के किनारे होटल ठोक देते हैं, तो वह नदी अपने रास्ते को reclaim करेगी ही।

उत्तरकाशी की हालिया त्रासदी में पूरा गांव बह गया। लेकिन वह गांव पहाड़ों की गोद में नहीं था — वह नदी के पाट में बना था। यह कोई आस्था नहीं थी, यह लालच था। और लालच कभी भी सुरक्षित नहीं रहता।

कठोर शब्द हैं, लेकिन सच यही है कि हम एक मूर्ख और संवेदनहीन समाज में तब्दील हो चुके हैं। हम आपदाओं को रोकने के बजाय उनका इंतज़ार करते हैं ताकि मीडिया को दृश्य मिलें और सरकारें मुआवजे का तमाशा कर सकें। हमने पर्यावरण को सिर्फ़ एक 'डॉक्युमेंट' बना दिया है। नीति आयोग से लेकर नगर पंचायत तक, हर स्तर पर विकास का मतलब अतिक्रमण हो गया है।

क्या यह दुखद नहीं कि पहाड़ों पर हो रही तबाही के बीच भी लोग 'डील' खोज रहे हैं — "इस सीजन होटल सस्ते मिल जाएंगे"? क्या हमने चेतना खो दी है?

दिल्ली के डीएनडी फ्लाईओवर पर एक ऑटो चालक ने मुझे बताया कि उसने किसी को यमुना में प्लास्टिक की बोतल फेंकते देखा और बहुत दुखी हुआ। एक छोटे इंसान की बड़ी भावना! लेकिन क्या उस भीड़ को कोई समझा सकता है जो हर नदी, हर घाट, हर पहाड़ को बस 'घूमने की जगह' समझती है?

हमारी आंतरिक यात्रा कभी शुरू ही नहीं होती। हम गाड़ी में बैठकर पहाड़ तक तो पहुंच जाते हैं, लेकिन हमारे अंदर का इंसान वहीं के वहीं मैदान में पड़ा रहता है — लालची, उपभोगी और शोरगुल में डूबा।

रेस्तरां का टपकता नल भले ही प्रतीकात्मक हो, लेकिन यह उसी उपेक्षा का प्रतीक है जो हमने हिमालय और पर्यावरण के साथ बरती है। हम जिस संसाधन को रोज़ टपकने देते हैं — पानी, हवा, हरियाली, मिट्टी, हिमनद — वे एक दिन सूख जाएँगे। फिर नल नहीं टपकेगा, तब शायद उसमें से हवा भी न निकले।

हम गाय को कचरा खिला कर भी उससे दूध की उम्मीद रखते हैं। हम पेड़ काटकर भी चाहते हैं कि बारिश हो। हम नदी को नाला बनाकर भी उससे आचमन की कामना करते हैं। क्या यह पाखंड नहीं है?

अब समय मौन शोक का नहीं, चेतना का है। अगर हम नहीं चेते, तो अगली बार कोई नदी, कोई पहाड़, कोई हवा, कोई भूचाल हमें बख्शेगा नहीं।

हमें पुनर्विचार करना होगा किः क्या हम अपने छोटे-छोटे प्रलोभनों को तिलांजलि देने को तैयार हैं? क्या हम पर्यावरणीय संतुलन को विकास की नींव बना सकते हैं? क्या हम 'घूमने' की जगह 'जुड़ने' की भावना से प्रकृति के पास जा सकते हैं? क्या हम एक नल टपकने से पहले उसे ठीक कर सकते हैं — ताकि एक पहाड़ गिरने से रोका जा सके?

मैं हिमालय नहीं जाती, न ही अपनी यात्राओं को पहाड़ों पर थोपती हूँ। यह कोई त्याग नहीं, सिर्फ़ समझदारी है। मैं विंध्याचल और अरावली की छोटी पहाड़ियों से संतुष्ट हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि हिमालय की छाती पहले ही विदीर्ण है — उसे और कष्ट देना अब पाप है।

जब तक हम विकास को सिर्फ़ भवनों और दुकानों में मापते रहेंगे, तब तक विनाश हमारा पीछा नहीं छोड़ेगा। हर बहता नल एक आपदा की दस्तक है। हर रिसता पहाड़, हर भरा हुआ नदी का पाट, हर टूटता पुल हमें चेतावनी देता है — कि **प्रलोभन का परिणाम बहुत गहरा होता है। नदियाँ जब निगलने लगती हैं, तब देर हो जाती है।**

पंचमुखी स्वरुप में दर्शन देते हैं नेपाल के पशुपतिनाथ

अंजनी सक्सेना

▪ स्मार्ट हलचल

नेपाल की राजधानी काठमांडू के पूर्वी भाग में बागमती नदी के किनारे पर देवाधिदेव महादेव पंचमुखी स्वरूप में पशुपतिनाथ के रुप में विराजमान है। पशुपतिनाथ मंदिर में यूं तो पूरे साल श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है, मगर श्रावण के महीने में तो मंदिर में भीड़ का नजारा देखने लायक होता है। वैसे भी मान्यता है कि सोमवार को यहां दूध-जल चढ़ाने वाले भक्त को भोले बाबा कभी खाली हाथ नहीं लौटाते। महाशिवरात्रि तथा सावन माह में यहां हजारों श्रद्धालु पहुंचते हैं।

पुराणों एवं धार्मिक ग्रंथों के अनुसार इस तपोभूमि के प्रति आकर्षित होकर भगवान शंकर कैलाश छोड़कर यहां आए और तीन सींग वाले मृग (हिरण)का रुप लेकर रहने लगे। शिव को कैलाश में न देखकर विष्णु और ब्रह्मा उन्हें खोजते हुए यहां पहुंचे। मृग को देखकर ब्रह्मा ने योगविद्या से उन्हें पहचान लिया और उसका सींग पकड़ने की कोशिश की। इस प्रयास में सींग के तीन टुकड़े हो गए। सींग का बड़ा हिस्सा जहां गिरा, वहीं पशुपति नाथ मंदिर बना है। कहा जाता है कि शिव की इच्छा के अनुसार भगवान विष्णु ने बागमती नदी

के किनारे ऊंचे टीले पर शिव को पशु योनि से मुक्ति दिलाकर शिवलिंग के रूप में स्थापना की जो पशुपति के रूप में विख्यात हुआ। देवाधिदेव भगवान शंकर यहां मृग बनकर पशु रूप में रहे, इसलिए इस क्षेत्र को पशुपति क्षेत्र कहा गया और शिव की पूजा पशुपति रूप में होने लगी।

एक कथा यह भी है कि महाभारत युद्ध के बाद भगवान शिव पांडवों से अप्रसन्न थे। मगवान शंकर की प्रसन्नता एवं आशीर्वाद की प्राप्ति के लिए पांडव उनके दर्शनों के लिए हिमालय पहुंचे। भगवान शिव उन्हें दर्शन नहीं देना चाहते थे, इसलिए उन्होंने भैंसे का रुप धारण कर लिया। पांडव उन्हें भैंसे के रूप में भी पहचान गए। भीम ने भैंसे को पकड़ना चाहा तो उनके हाथ में पीठ ही आई जो केदारनाथ में पूजित हुई। शेष शरीर पशुपतिनाथ के रुप में नेपाल में प्रकट हुआ।

पशुपतिनाथ मंदिर में भगवान शिव का एक विशाल पंचमुखी लिंग है। इस लिंग के चार मुख चारों दिशाओं में हैं, और पांचवां मुख ऊपर की ओर है, जो अदृश्य है। इस शिवलिंग के चार मुख पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशाओं की ओर हैं। पांचवां मुख ऊपर की ओर है, जो अदृश्य है। मान्यताओं के अनुसार इस शिवलिंग का प्रत्येक मुख भगवान शिव के अलग-अलग पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है, जैसे कि सद्योजात, वामदेव, तत्पुरुष, अघोर और ईशान। पांचवे मुख को ईशान कहा जाता है, यह ऊपर की ओर है और आमतौर पर भक्तों को दिखाई नहीं देता है।

नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर में नंदी की सबसे बड़ी प्रतिमा है। मंदिर का मौजूदा स्वरूप करीब चार सौ साल पुराना है। तत्कालीन राजा शिव सिंह मल्ल की पत्नी गंगा देवी ने मंदिर का पुनर्निर्माण कराया था। सन् 1640 में नेपाल नरेश प्रताप मल्ल ने पशुपतिनाथ मंदिर परिसर में अनेक छोटे-छोटे मंदिरों का निर्माण कराया। पहले यह मंदिर लकड़ी का बना हुआ था। लकड़ी के बने बहुत बड़े अंश को दीमकों के क्षतिग्रस्त कर दिए जाने के कारण 1962 में व्यापक स्तर पर मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ।

पशुपतिनाथ मंदिर के संस्थापकों की बीसवीं पीढ़ी के काठमांडू शासक धर्मदेव ने शिवलिंग के पश्चिमी मुख की ओर पीतल का विशाल नंदी स्थापित कराया था। मंदिर के मेन गेट से प्रवेश करते ही नंदी का पिछला हिस्सा दिखाई देता है। कहा जाता है कि नेपाल के तमाम मंदिरों में स्थापित नंदी की प्रतिमाओं में यह सबसे बड़ी है। यहां के चौसठ लिंग मंदिर में शिवलिंग के उत्तर मुख के सामने शिवजी के दो विशाल त्रिशूल स्थापित हैं। दोनों पर डमरू भी हैं। उत्तर-पूर्व कोने में सर्पों के देव वासुकी का मंदिर है।

ऐसी मान्यता है, पशुपतिनाथ के दर्शन से पूर्व वासुकी के दर्शन करने चाहिए। इस प्रतिमा की स्थापना 1640 में प्रताप मल्ल ने कराई थी। वासुकी मंदिर के सामने तांडव करते हुए शिव मंदिर है। इसका स्वरूप व शैली दक्षिण भारतीय मंदिर जैसी है। पशुपतिनाथ मंदिर में ही शेषशय्या पर लेटे विष्णु, भगवान त्रिविक्रम, विरूपाक्ष, श्रीकृष्ण व सत्यनारायण मंदिर हैं। दक्षिण दरवाजे के पास चौसठ लिंग मंदिर है, जहाँ पांच सौ शिवलिंग हैं। नेपाल में विभिन्न नामों से चौसठ प्रमुख शिव मंदिर हैं। उसी आधार पर इसका नाम चौसठ लिंग मंदिर पड़ा।

कहा जाता है कि पशुपतिनाथ मंदिर के परिसर में हिंदू धर्म में आस्था रखने वालों को ही प्रवेश करने की अनुमति दी जाती है। गैर हिंदू आगंतुकों को बागमती नदी के दूसरे किनारे से इसे बाहर से देखने की अनुमति प्रदान की जाती है।

स्वत्वाधिकार प्रकाशन एवं मुद्रक राजकुमार आमेटा के लिए स्मार्ट कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, कोर्ट के सामने, माण्डलगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित। मो. 9649222850 Email.smarthalchalnews@gmail.com

सरसों में रोग अनेक उपाय एक

तोरिया और तारामीरा भारत की प्रमुख तिलहनी फसलें हैं। इसमें 25 बीमारियां लगती हैं। इन रोगों से बचाव कर सरसों का उत्पादन बढ़ाने का एकमात्र उपाय सरसों का फसल में समन्वित रोग प्रबंधन प्रणाली अपनाना ही है। सरसों के मुख्य रोग एवं उनका समन्वित प्रबंधन इस प्रकार है :-

सरसों

तोरिया और तारामीरा भारत की प्रमुख तिलहनी फसलें हैं। इसमें 25 बीमारियां लगती हैं। इन रोगों से बचाव कर सरसों का उत्पादन बढ़ाने का एकमात्र उपाय सरसों का फसल में समन्वित रोग प्रबंधन प्रणाली अपनाना ही है। सरसों के मुख्य रोग एवं उनका समन्वित प्रबंधन इस प्रकार है :-

सफेद रोली

यह रोग एल्बूगो कैन्डिडा कवक द्वारा उत्पन्न होता है। जड़ को छोड़कर पौधों के सभी भागों पर रोग के लक्षण दिखाई देते हैं। रोग का प्रभाव पौधे पर दो प्रकार से होता है :

1. स्थानीय 2. सर्वांगी

स्थानीय संक्रमण में पत्तियों और तनों पर फफोले बनते हैं। यह फफोले कुछ उभरे हुए, चमकीले सफेद, अनियमित गोलाकार होते हैं। अधिक पास-पास होने पर यह फफोले मिलकर बड़े धब्बों का रूपधारण कर लेते हैं। फफोले बड़े होने पर बाहरी त्वचा फट जाती है तथा अंदर से कवक के बीजाणुओं का समूह पाउडर के रूप में निकलता है। तरूण तनों तथा पुष्पक्रम पर इस रोग का सर्वांगी असर होता है। उत्तकों की अतिवृद्धि होने से पुष्प अंग फूल जाते हैं। इन सभी अतिवृद्धि अंगों में फफूंद के स्पोर भरे रहते हैं। फलियों के स्थान पर गुच्छे दिखते हैं।

आल्टरनेरिया पर्ण दाग और अंगमारी

यह रोग आल्टरनेरिया ब्रैसिकी और आल्टर ब्रैसिसिकोला कवक से होता है। सर्वप्रथम यह बीमारी बीज पत्रीय पर्णों पर छोटे-छोटे हल्के भूरे रंग के चकत्तों के रूप में दिखाई देते हैं जो कि बाद में काला रूप धारण कर लेते हैं। पत्तियों पर संक्रमण भूरे या गहरे भूरे रंग के दागों से आरंभ होता है और बढ़कर शीघ्र ही यह तनों और फलियों में फैल जाता है। आर्द्र मौसम में दाग मिलकर पत्तियों को झुलसा देते हैं। जिससे पत्तियां झड़ने लगती हैं। फलियों पर दाग आगे बीज का संक्रमण करते हैं। बीमारी वाले बीज छोटे आकार के व सिकड़े हुए स्लेटी या भद्दा रंग धारण कर लेते हैं। जिन वर्षों में पौधे या तो पहले नष्ट हो जाते है या फलियां बनने या पकने के पहले पूर्ण रूप से खत्म हो जाती है।

छाछिया रोग (पाउडरी मिल्ड्यू):

यह रोग ऐरीसाइफी क्रुसीफेरेरम कवक द्वारा होता है। संक्रमित पौधों में प्राय: जमीन के सम्पूर्ण हिस्सों पर यह रोग देखा जा सकता है। प्रारंभ में यह रोग पौधों के तनों पत्तियों एवं फलियों पर श्वेत, गोल चूर्णित धब्बों के रूप में दिखाई पड़ता है। तापमान की वृद्धि के साथ-साथ में धब्बे आकार में बड़े हो जाते हैं और समस्त पौधों को ढ़क लेते है। ऐसे पौधों की बढ़वार बहुत कम होती है और फलियां भी कम लगती हैं। रोगग्रस्त फलियां आकार में छोटी हो जाती हैं और उनमें सिकुड़े हुए कुछ ही बीज बन पाते हैं।

तना गलन

यह रोग स्क्लेरोटिनिया स्क्लेरोटियोरम कवक से होता है। रोग के लक्षण के आधार पर इसे श्वेत-अंगमारी, तना विगलन, शाखा विगलन, शिखर विगलन तथा कैंकर कई नामों से जाना जाता है। तने के निचले भाग में मटमैले या भूरे रंग के फफोले दिखाई देते हैं। प्राय: यह फफोले रूई जैसे सफेद जाल से ढ़के रहते हैं। पत्तों पर इसके लक्षण कम दिखाई देते हैं। इसी कारण जब तक कि पूरा का पूरा पौधा अंदर से गल न जाए, रोगग्रस्त पौधे आसानी से पहचान में नहीं आता। ये फफोले तने व पत्तों को इस तरह ढ़क लेते हैं कि पौधा मुरझाकर लटक जाता है अंत में सूख जाता है। इस रोग के प्रभाव से पौधा बोना हो जाता है और समय से पहले ही पक जाता है। रोग के बीजाणु काले उड़द के दानों की तरह तने के भीतरी भाग में पनपते हैं जिससे कि बाहर से देखने पर उसका आभास ही नहीं हो पाता। कई बार ये बीजाणु तने की ऊपरी सतह पर भी दिखाई देते हैं।

औरोबंकी या आग्या

सरसों, तोरिया, राया फसलों पर औरोबंकी इलिप्टिका परजीवी का प्रकोप होता है। औरोबंकी से ग्रस्त पौधे सरसों के छोटे रह जाते है और कभी-कभी मर भी जाते हैं। औरोबंकी के चूषकांग (हॉस्टोरिया) सरसों की जड़ो में घुसकर पोषक तत्व प्राप्त करते हैं। सावधानी से उखाड़ कर देखें तो पता चलता है कि औरोबंकी की जड़े सरसों की जड़ों के अंदर घुसी हुई दिखती है। सरसों के पौधे के नीचे मिट्टी से निकलते हुए औरोबंकी परजीवी दिखाई पड़ते है।

सरसों में समन्वित रोग प्रबंध

- सरसों में सफेदरोरी, झुलसा तथा डाऊनी मिल्ड्यू रोग लगता है। उन क्षेत्रों में एपरॉन 35 एसडी का बीजोपचार करें।
- जिन क्षेत्रों में तना गलन का प्रकोप होता है वहां कार्बेण्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलो से बीजोपचार करें या थायोफिनेट मिथाईल 2 ग्राम प्रति किलो से बीजोपचार करें।
- फसल की सिंचाई आवश्यकतानुसार करें तथा खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
- बुवाई समय पर यानि अक्टूबर माह के अंत तक पूरी कर देनी चाहिये देरी से बुवाई में अधिक रोग लगते है।
- पौधों में फूल आने पर 0.1 प्रतिशत पर से कार्बेन्डाजिम अथवा थायोफिनेट मिथाइल को 20 दिन के अंतराल में दो बार (बुवाई के 50 एवं 70 दिन बाद) पत्तियों पर छिड़काव करने से सरसों में तना गलन को नियंत्रित किया जा सकता है।
- सरसों में सफेदरोरी, झुलसा एवं डाऊनी मिल्ड्यू का प्रकोप जहां होता है वहां इन रोगों के लक्षण दिखाई देते ही रिडोमिल एम जेड या मेन्कोजेब 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें आवश्यकतानुसार पुन: 15 दिन बाद दोहरावें।
- जिन क्षेत्रों में छाछिया रोग का प्रकोप होता है वहां रोग नियंत्रण के लिए केराथेन 0.1 प्रतिशत या घुलनशील गंधक 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें या गंधक चूर्ण 25 किलो प्रति हेक्टेयर का भुरकाव करें।
- जहां औरोबंकी का प्रकोप अधिक होता है वहां औरोबंकी परजीवी को हाथ से उखाड़कर या सावधानी से कसी से निराई-गुड़ाई द्वारा जमीन के ऊपर के तने को काटकर बीज बनने से पहले ही नष्ट कर देना चाहिये।
- औरोबंकी के पौधों पर दो बूंद सोयाबीन के तेल का डाल देने से भी पौधा मर जाता है। यदि रसायनों का प्रयोग करना है तो सावधानी से औरोबंकी पर ग्लाइफोसेट 0.4 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें ध्यान रहे सरसों पर न गिरे।
- जहां सफेदरोरी का प्रकोप अधिक होता है वहां बेसिका अल्बा, ब्रेसीका केरीनेटा, ब्रेसीका नेपस का जातियां सफेदरोरी व अन्य रोगों से रोधी है उपयोग में लावें।
- तना गलन का प्रकोप होता है वहां धान व मक्का का फसल चक्र अपनावें, औरोबंकी ग्रसित क्षेत्रों में अरंडी का फसल चक्र अपनावें। उड़द एवं सरसों की क्रमवार बुवाई से भी तना गलन कम होता है।
- नए क्षेत्रों में औरोबंकी या अन्य रोगी खेत से बीज का प्रवेश नहीं होने देना चाहिये तथा परजीवी के बीज रहित सरसों के शुद्ध बीज का उपयोग करना चाहिये।

अरहर फसल को कीटों के प्रति अधिक सावधानियां रखनी होती है क्योंकि इस फसल में भी अन्य फसलों की तरह अंकुरण से लेकर पकने तक की अवस्था में विभिन्न प्रकार के कीटों का आक्रमण होता है परंतु फूल एवं फली वाली अवस्था में प्रकोप होने पर उत्पादन में कमी आ जाती है। इन अवस्थाओं में आर्थिक रूप से हानि पहुंचाने वाले प्रमुख कीटों को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-

अरहर में एकीकृत कीटनाशी प्रबंधन

भेदक कीट

हरी रोंयेदार इल्ली या पिच्छकी शलभ (प्लूम मॉथ), चने की इली (हेलिकोवर्पा आर्मीजेरा), फली मक्खी (पॉड फ्लाई), चित्तीदार फली भेदक (स्पाटेड पॉड बोरर) आदि।

रसचूसक कीट

भूरा फली बग (क्लेवीग्रेला गिब्बोसा) आदि।

समन्वित कीट प्रबंधन की विभिन्न विधियों का विवरण इस प्रकार है-

- फसल अवशेषों को नष्ट तथा ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना चाहिये।
- अरहर की जल्दी पकने वाली जातियों का चुनाव करें जैसे- प्रगति, जाग्रति, उपास 120, प्रभात आदि।
- जिन क्षेत्रों में चित्तीदार फली भेदक का प्रकोप अधिक होता है वहां पर मध्यम अवधि की किस्मों की खेती करें जैसे आशा, नं. 148 आदि। इन जातियों में कीट प्रकोप कम होता है।
- प्रारंभिक अवस्था में हरी रोयेंदार इल्ली (पिच्छकी शलभ) की हरे या भूरे रंग की इल्लियों तथा शंखियों को इकट्ठा कर नष्ट कर दें।
- चने का फली भेदक प्रकोपित क्षेत्रों में फेरोमेन प्रपंच का उपयोग करें तथा हर दिन सुबह इनमें इकट्ठी पंखियों को नष्ट कर दें। एक हेक्टेयर में 5 फेरोमेन प्रपंच लगाना चाहिए। इन प्रपंचों में प्रयुक्त सेप्टा को 15 दिन बाद बदल दें।
- प्रकाश प्रपंच का उपयोग करें तथा सुबह इनमें इकट्ठा प्रौढों को नष्ट कर दें।
- खेत के अन्दर 4 से 5 मीटर की दूरी पर टी आकार की बांस की खूंटियों को, जिसकी लगभग ऊंचाई फसल से 30 से.मी. अधिक हो, लगा दें।
- अरहर की फसल में हानिकारक कीटों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के परभक्षी मित्र जीव (मकड़ी, बड़ा पतंगा, मेन्टिड, काक्सीनेला, रिजूविड बग, क्रायसोपा आदि) परजीवी मित्र कीट (एपेन्टेलिस, ब्रेकान, ग्रायन, डायडिगमा, केम्पोलेटिस आदि) तथा रोगाणु पाये जाते हैं। अत: कीटनाशकों का प्रयोग बहुत सोच समझकर करें ताकि मित्र जीवों का संरक्षण एवं संवर्धन फसल के अंदर होता रहे।
- हानिकारक कीटों के सर्वेक्षण के अंतर्गत फसल पर फूलने एवं फली भरने की अवस्था पर हानिकारक कीट एवं उनके प्राकृतिक शत्रु (मित्र कीट) की संख्या के आकलन हेतु सामान्य नजरिया आकलन सप्ताह में दो बार करना चाहिये।
- अरहर में फूल आने की अवस्था में जब कीड़े आर्थिक हानि स्तर पर पहुंचने लगे या हानिकारक कीटों एवं लाभदायक जीवों का अनुपात 1: 05 होने पर सतर्क हो जायें तथा कम अनुपात होने पर कीटनाशकों का उपयोग करें। पहला छिड़काव 10 दिनों के अंतराल पर एन. पी. वी.(न्यूक्लियर पालीहाइड्रोसिस वायरस) का 250-500 एल.ई. या नीम तेल का 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें। यह नव विकसित इल्लियों के नियंत्रण के लिये काफी कारगर होता है।
- कीटों के अधिक प्रकोप होने की स्थिति में रसायनिक नियंत्रण के लिए प्रथम छिड़काव मेलाथियान 50 ई.सी. 35 ई.सी. एक लीटर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से एवं उसके 15 दिन बाद दूसरा छिड़काव इसके बाद भी आवश्यकता पड़ने पर फिर से 15 दिन बाद तीसरा छिड़काव क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. एक लीटर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से करें। हमेशा अदल-बदल कर कीटनाशकों का उपयोग करें।

उक्त समन्वित विधियों को अपनाकर किसान भाई अरहर के हानिकारक कीटों

का प्रभावशाली ढंग से प्रबंधन कर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकते हैं। साथ ही कीटनाशकों से होने वाली प्रदूषण की समस्याओं को भी कम कर सकते हैं।

सावधानी से करें यूरिया का उपयोग

यूरिया का वर्गीकरण

यूरिया बहुउपयोगी उत्पाद है जिसको निम्न लिखित तीन वर्गों में विभाजित किया गया है.

कृषि ग्रेड यूरिया

कृषि फसलों एवं उद्यानिकी फलों, मसाला, सब्जियों आदि हेतु.

पशु आहार ग्रेड यूरिया

विभिन्न श्रेणी के पशुओं के दूध बढ़ाने फैट की मात्रा बढ़ाने तथा प्रोटीन के प्रमुख स्रोत हैं.

टेक्निकल ग्रेड यूरिया

औद्योगिक उत्पाद के लिए पेड़-पौधों को यूरिया की उपलब्धता तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में नत्रजन की क्षति - यूरिया का उपयोग मुख्य रूप से दो प्रकार से फसलों की आयु, वृद्धि की स्थिति, खेत की मिट्टी, जल स्तर, मिट्टी की अम्लता एवं क्षारीयता आदि स्थितियों के आधार पर किया जाता है। ठोस गोलियों के रूप में यूरिया को खेत की तैयारी के समय अन्य कार्बनिक खाद, स्फुर, पोटाश, सूक्ष्म तत्वों के साथ डाला जाता है। परंतु यह ध्यान रखें कि यूरिया कम से कम 3 इंच गहराई तक डाला जावे जिससे वह जमीन के अंदर अन्य जैविक स्रोतों, उपस्थित एंजाइम आदि के संयोजन से पौधों को उपलब्ध हो सके। समुचित नमी के अभाव में अथवा आक्सीजन की कमी आदि के कारण यूरिया के नत्रजन की गैस रूप में क्षति होती है। यदि भूमि अम्लीय एवं क्षारीय हो तो यूरिया न डाला जाए क्योंकि यूरिया उर्वरक की विशेषता है कि वह न तो अम्लीयता और न क्षारीयता के रासायनिक क्रिया में न्यूट्रल रहता है। यूरिया की खास विशेषता है कि वह पौधों को नाइट्रेट के रूप में नत्रजन देती है परंतु रासायनिक क्रियाओं में न्यूट्रल रहती है। जल में शीघ्रता से घुल जाती है तथा मिट्टी इसे अपने में सोख लेती है। खड़ी फसल में यूरिया कई बार पौधों की वृद्धि के अनुसार छिड़क कर दिया जाता है परंतु ऊपरी सतह पर सिंचाई करना जरूरी है।

यूरिया घोल के रूप में छिड़कना

यूरिया को ठोस उर्वरक के रूप में उपयोग करने के साथ विपरीत परिस्थितियों में घोल के रूप में देना विशेष लाभप्रद है। क्योंकि उर्वरक की मात्रा कम लगती तथा उसका प्रभाव पत्तियों पर शीघ्र पड़ता है। घोल के रूप में यूरिया छिड़कते समय वायुमंडलीय आर्द्रता, पौधों की आयु, वानस्पतिक वृद्धि, पत्तियों का अच्छा विकास, पत्तियों में संचयित शकर की मात्रा के आधार पर घोल की सांद्रता निर्धारित करें। यूरिया को घोल के रूप में देते समय कीटनाशक दवाओं, फफूंदनाशक दवाओं, खरपतवारनाशक दवाओं के साथ मिलाकर छिड़कने से विशेष लाभ होता है परंतु ऐसे मिश्रण बनाते समय रसायनों का फैलाना आदि किसी कृषि जानकर वैज्ञानिक की सलाह से करना उचित होगा।

यूरिया घोल का छिड़काव किस प्रकार के स्प्रेयर से करें तथा घोल की सांद्रता कितनी रखी जावे

सामान्यत: ग्रामीण क्षेत्रों में नेपसेक स्प्रेयर (हॉइवाल्यूम) आसानी से उपलब्ध होते हैं। उसमें फाइन नोजल रखा जावे तथा 6% घोल 600-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़कें। मुलायम, नवीन पत्तियों वाले पौधों पर पतला घोल तथा वयस्क एवं हाई पौधों की सांद्रता वैज्ञानिकों के द्वारा की गयी अनुशंसा के आधार पर करें।

निम्न परिस्थितियों में यूरिया घोल को छिड़काव करना चाहिए -

- जब खेत में आधार या टाप ड्रेसिंग तरीके से उर्वरक देना संभव न हो।
- खेत की तैयारी हेतु समय कम हो।
- क्षारीय एवं अम्लीय मिट्टियां तथा मरुभूमि में।
- फसल प्रतिस्पर्धा तथा भूमि स्थिति ठीक न हो।
- जब पौधे की गुणवत्ता तथा मरम्मत आदि निर्धारित हो।
- जब उर्वरक महंगा एवं अनुपलब्ध हो।
- असिंचित एवं बारानी भूमि।
- जब फसल कमजोर एवं क्षतिग्रस्त हो।

यूरिया का विकार बाइयुरेट

जब यूरिया की प्रिल (गोलियां अधिक (उच्च) तापमान एवं दाब पर बनाई जाती हैं तो समय अधिक लगने से यूरिया में एक अशुद्धि हो जाती है उसे 'बाइयुरेट' कहते हैं। जिन यूरिया में 1-2 प्रतिशत तक बाइयुरेट हो तो उसे आधार खाद या टाप ड्रेसिंग के लिए दिया जाये परंतु घोल के रूप में 0.300-0.4% के बाइयुरेट वाली यूरिया पशु आहार के रूप में उपयोग की जाती है। वह पशु आहार के लिए उपयुक्त है।

यूरिया घोल छिड़कते समय निम्न बातों पर ध्यान दें-

- यूरिया घोल की सांद्रता पौधों की आयु, वृद्धि के आधार पर निर्धारित करें।
- पत्तियों का अच्छा फोलरिज हो।
- हवा एवं वर्षा की स्थिति में छिड़काव न करें.
- दिन के गर्म अवधि में छिड़काव न करें.
- स्प्रेयर का नोजल महीन बूंदें दें।
- यूरिया घोल में कीटनाशक, फफूंदनाशक, खरपतवारनाशक दवाओं का उचित मिश्रण बनाकर ही छिड़काव करें।

स्वत्वाधिकार प्रकाशन एवं मुद्रक राजकुमार आमेटा के लिए स्मार्ट कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, कोर्ट के सामने, माण्डलगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित। मो. 9649222850 Email.smarthalchalnews@gmail.com

स्वत्वाधिकार प्रकाशन एवं मुद्रक राजकुमार आमेटा के लिए स्मार्ट कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, कोर्ट के सामने, माण्डलगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित। मो. 9649222850 Email.smarthalchalnews@gmail.com